दीवाना
तेज साप्ताहिक मनोरंजन टॅवम १ रुपया

शिक्षा—जानवरों को बातों के जाल में फंसाना उतना आसान नहीं है जितना आद

साप्ताहिक भविष्य

४अक्तूबर से १०अक्तूबर १९७९ तक
पं० कुलदीप शर्मा ज्योतषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष : गुरु सिंह राशि में आ रहा है, मेष राशि वालों के लिए इसका प्रभाव शुभ है, सुधार एवं प्रगति की योजनाएं सामने आयेंगी, घरेलू वातावरण में भी सुधार होने लगेगा, नौकरी आदि में उन्नति।

वृष : सिंह राशि के गुरु का प्रभाव इस राशि पर शुभ नहीं, घरेलू समस्यायें अधिक रहेंगी, आर्थिक लाभ भी आशा से कम ही मिला करेगा, निकट सम्पर्क वालों से मन-मुटाव, मित्रों से सहयोग मिलता रहेगा।

मिथुन : इस राशि पर सिंह राशि के गुरु का प्रभाव मध्यम है, अच्छे लोगों की संगति व सहयोग से भाग्य साथ देगा, परिश्रम करने पर सफलता मिलती रहेगी, नवीन कार्य भी बन सकते हैं, लाभ ठीक-ठीक होता रहेगा।

कर्क : इस राशि वालों के लिए सिंह राशि के गुरु का प्रभाव शुभ है, धन लाभ के चांस मिलेंगे, आर्थिक क्षेत्र में भी दृढ़ता होती जावेगी, स्थायी काम-धन्धों में उन्नति, आत्म-विश्वास बढ़ेगा।

सिंह : इस राशि पर सिंह राशि के गुरु का प्रभाव मध्यम है, स्थायी कारोबार से लाभ होता रहेगा, आर्थिक स्थिति पहले जैसी ही, नई योजनाओं पर व्यय, मित्र से सुख कम मिलेगा, शत्रु अधिक हार मानेंगे।

कन्या : सिंह राशि के गुरु का प्रभाव इस राशि पर अच्छा नहीं है, नए कामों में हानि, वैर-विरोध से चिन्ता, परन्तु दुश्मन आपका सामना न कर पायेंगे, मित्रों से भरपूर सहयोग मिलता रहेगा।

तुला : इस राशि पर सिंह के गुरु का प्रभाव शुभ रहेगा, कारोबार-नौकरी आदि में सफलता, उन्नति एवं प्रगति के चांस मिलेंगे, नई योजनाओं में सफलता भाग्य साथ देने लगेगा, अशुभ फलों में कमी होगी।

वृश्चिक : सिंह राशि के गुरु का प्रभाव इस राशि पर मध्यम है, व्यापार ठीक चलेगा, आर्थिक लाभ भी समय पर होता रहेगा, परिश्रम का फल पूरा न मिलेगा, नए काम आरम्भ न करें।

धनु : इस राशि वालों के लिए सिंह राशि के गुरु का प्रभाव शुभ है, कुछ नए परिवर्तन एवं कई तरह के सुधार होते महसूस होंगे, आर्थिक कठिनाई दूर होगी और ऋण आदि से छुटकारा मिल जाएगा।

मकर : सिंह राशि के गुरु का प्रभाव इस राशि पर अशुभ है, घरेलू एवं कारोबारी हालात से परेशानी बनेगी, लाभ आशा से कम, यात्रायें अधिक और व्यर्थ की भी, शारीरिक कष्ट, आर्थिक तंगी।

कुम्भ : इस राशि वालों के लिए सिंह राशि के गुरु का प्रभाव शुभ है, रोजगार नौकरी आदि में उन्नति, सुधार की योजनाएं भी बनेंगी, शत्रु अपनी हार मानेंगे, बिगड़े काम बन जायेंगे।

मीन : इस राशि पर सिंह राशि के गुरु का प्रभाव मध्यम है, किसी नए काम पर विचार, योजनाएं सफल, शुभ कामों में रुचि अधिक रहेगी, बड़े-बड़े लोगों का आसरा रहेगा।

आपके पत्र

दीवाना, हास्य रस की पत्रिकाओं की सरताज है। इसका हर अंक बड़ा ही मजेदार होता है। कृपया मोटू-पतलू को रंगीन बनायें। 'दीवाना' दिन पर दिन कामयाबी के पथ पर है मैं इसकी सफलता की कामना करता हूं।

दीपक की तरह यूं ही दीवाना रहे रोशन,
फूलों की तरह यूं ही दीवाना बने गुलशन।

दीपक शर्मा—शाहजहांपुर

बड़ा टाईटल देखकर दिल बहुत खुश हुआ। चिल्ली का मुख पृष्ठ बहुत पसन्द आया। सिलबिल पिलपिल, मोटू पतलू, पचंतंत्र, सवाल यह है बहुत ही मजेदार रहे। मदहोश होश में आ न देखकर दिल कुछ बेचैन सा हुआ। ठोकर धारावाहिक उपन्यास की अन्तिम किस्त बहुत अच्छी लगी। दीवाना की वैसे हर सामग्री बहुत ही अच्छी रहती है। दीवाना में मैं अपना फोटो भेजना चाहता हूं, कितने दिन बाद छप जायेगी?

नरेन्द्र कुमार गाबा—हांसी

नम्बर आने पर तुरन्त छप जाएगी—सं०

दीवाना का नया एवं मनमोहक मुख पृष्ठ से सजा अंक २५ प्राप्त हुआ। इस अंक को पाकर बेहद ही हर्ष हुआ! इस अंक के विशेष 'हियर इज़ लस्सी', सवाल यह है, पति पत्नी की लड़ाई, सड़क के संकेत चिन्ह, भेंट वार्ता महेन्द्र सिन्धु से आदि ने बेहद ही प्रभावित किया।

एक विशेष बात और, मेरे ख्याल से हिन्दी पत्रिकाओं में शायद 'दीवाना' ही एक मात्र पत्रिका है जिसमें सबसे ज्यादा स्तंभ हैं!

कृपया दीवाना की रंग भरो प्रतियोगिता को पुनः आरंम्भ करने का कष्ट करें।

श्याम माहेश्वरी 'अशोक'—फारबिसगंज

मैं दीवाना का नियमित पाठक हूं। दीवाना का नया अंक २६ मिला, पढ़कर अत्यन्त खुशी हुई। मोटू-पतलू, ठोकर, फैंण्टम, सिलबिल पिलपिल, सवाल यह है काफी रोचक लगी, कृपया आप यह बताएं कि पुराने स्तम्भ क्यों बंद कर रहे हैं।

बलीराम धर्मानी—रायपुर

पाठकों की रुचि को देखते हुए कुछ नये स्तम्भ शुरू किये हैं। पुराने स्तम्भ भी समय-समय पर छपते रहेंगे। —सं०

दीवाना का नया अंक प्राप्त हुआ। आशा के अनुसार ये अंक भी मजेदार रहा। 'परोपकारी', 'बात-बे-बात की', 'मदहोश' तो मेरे प्रिय फीचर हैं। कृपया आप फिल्मों की पैरोडी दिया करें। 'काका के कारतूस' के तो कहने ही क्या हैं। 'मोटू-पतलू' तथा 'पिल-पिल सिलबिल' भी खूब जमे। कृपया आप हास्य-व्यंग्य की कहानी छापा करें।

प्रेम प्रकाश पाल—दार्जिलिंग

मैं दीवाना का सबसे पुराना पाठक हूं। दीवाना एक ऐसी पत्रिका है जो कि हास्य व्यंग के साथ-साथ शिक्षा प्रद भी है। और इसके स्तम्भ सब एक से बढ़कर एक होते हैं। अगर भविष्य में भी इसी तरह के खजाने की तरह आती रही तो यह अवश्य ही सबसे सर्वश्रेष्ठ पत्रिका कहलायी जाएगी।

चेतन दास—इटावा

दीवाना का अंक २८ मिला।

काका के कारतूस पढ़कर ही ऐसा लगा कि ३ रुपये वाली किताब १ रुपये में ही मिल गयी हो। जरा सोचिये व परोपकारी भी बेहद पसन्द आये। गरीबचन्द की डाक पढ़कर ऐसा लगा कि कोई व्यक्ति ५ रुपये लेकर भी ऐसे मजेदार जवाब नहीं दे सकता। बाकी सभी बेहद उम्दा रहा।

क्या ऐसा नहीं हो सकता कि आप दो-तीन पेज चाचा चौधरी के दे दें या फैंण्टम के पेज भी बढ़ा दें। अगर ऐसा हो जाये तो वाकई दीवाना का रंग इतना पक्का जमेगा कि पाठकों के दिल पर फिर इतना किसी पत्रिका का रंग नहीं जमेगा और दीवाना में छपने वाली सामग्री के हिसाब से कम से कम १२ रुपये होगी दीवाना की कीमत, लेकिन १ रुपये में ही इतना मजा देगी। **सम्राट अख्तर 'वजीर',—बुलन्दशहर**

मुख पृष्ठ पर

पूछा सेक्रेटरी ने जब,
मैं पास हुई या फेल
बॉस को लिखने के लिये
कागज मिला न एक।
कागज मिला न एक
निर्णय अब सुनो "बॉस" का
बोला इस तरफ देखो,
और मतलब समझो "हास्य" का!!

अंक:३२, ४ अक्तूबर से १० अक्तूबर तक
वर्ष:१५

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे की दरें वार्षिक: ४८ रु०
छमाही: २५ रु० द्विवार्षिक: ९५ रु०

आदिमानव
सरदार, रात नाले के पार वाले जंगल में भूचाल आया, ज्वालामुखी पहाड़ फट गया। कई सौ जंगली आदमी और जंगली जानवर मारे गये। बहुत नुकसान हुआ। कई जंगली अब भी जख्मी हैं हाहाकार मचा है।
अच्छा कमाल की बात है, देखो हमें यहाँ कुछ भो पता नहीं लगा।
पिछले साल सर्दियों में जब ग्लोशियरा आया था तब भी तो हमें कुछ भो पता नहीं लगा था

सरदार मेरी बात मानो तो आप जल्दी ही अपनी ही गुफा में टेलीफोन लगवा लो। आजकल सभी जंगली सरदारों ने अपनी-अपनी गुफाओं में लगवा रखा है। आस-पास के जंगलों में जैसे कल का सा हादसा हो तो जल्दी ही पता लग जाता है। और भी कई फायदे हैं, आजकल का स्टेटस सिम्बल तो है ही ये।

अरे, इसी टेलीफोन के लिए तो अपनी मेम साहब भी रोज सिर खाती है। पड़ौस के जंगलों में उसकी सहेलियां हैं न। अच्छा तो तुम लगवा लो भई टेलीफोन। कम्पनी वालों से कह दो। जब सब लगवा रहे हैं तो मैं ही पीछे क्यों रहूँ। अब जमाने के साथ हमें भो चलना पड़ेगा।
साइंस का जमाना है सरदार।

मुबारक हो सरदार ! लो लग गया टेलीफोन। नीचे मीठे पानी के कछुए की खोल को जमीन के साथ अच्छी तरह जमाया गया है। बारहसिंगे की सींग का अल्ट्रामार्डन रिसीवर लगा है। रिसीवर और खोल को देनासोर की पूंछ की मोटी नस से जोड़ा गया है। आप रिसीवर उठाकर कान से लगाओगे तो दूर-दूर तक हलचल का पता लगेगा। आसपास के जंगलों में ग्लोशियर आये या भूचाल गड़गड़ाहट की आवाज इसमें सुनाई पड़ेगी। घोड़ों या दूसरे जानवरों के झुंड दौड़ रहे होंगे तो बारह कोस दूर से इसमें आवाज सुनाई पड़ती है।
चलो अपना नाम भी टेलीफोन डायरेक्टरी शिलालोक में खुद जायेगा।
साइंस ने कितनी तरक्की की है

परोपकारी

मैं जो किताब लिख रहा हूं न हिन्दुस्तानी जंग के बारे में, उसी के सिलसिले में आया था।

परोपकारी जी, यहां फ्रन्ट में कैसे आना हुआ ?

फिर तो कोई फिक्र की बात नहीं, मेरी तो सारी बिरादरी फौजियों की है। जो कहेंगे वही सूचना में आपको दे सकता हूँ।
अच्छा तब तो तुम बड़े काम के आदमी हो।

सबसे पहले अपने चाचा सूबेदार जरनल सिंह के बारे में बताता हूं जो हाल ही में इन्हीं जंग के मैदान में शहीद हुए।
अच्छा ? कहां, क्यों और कैसे, जरा सब कुछ खुलासा से बताओ !

वह टूटी-फूटी बिल्डिंग दिख रही है ?
हां-हां दिख रही है।
जो बम्ब गिरने की वजह से टूट गई थी, बस उसी के एकदम सामने चाचा जी का हादसा हुआ !

बड़ी दर्दनाक दशा थी उनकी...
वे गोलियों से बुरी तरह घायल थे क्या ?

नहीं शराब से बुरी तरह धुत !!
THE NATIVE

बात-बे-बात की

देखा बद्री, मेरी दवाई का कमाल ! जब तुम यहां आए थे अपने आप को अमिताभ बच्चन कह रहे थे !
धन्यवाद डाक्टर साहब आपका !
यह रहा दवाई का बिल !
बिल ? बिल की जो बात करनी है वह टैलिफोन पर जया भादुड़ी से कर लीजिए !

मास्टरजी ने अविनाश को घूरकर देखा और कड़ककर बोले—

'यह क्या लिखा है तेरी तख्ती पर ?'

अविनाश ने बिना घबराहट के तख्ती पर लिखा वाक्य दोहराया और मास्टरजी ने गुस्से से बिलबिलाकर एक डंडा अविनाश की पीठ पर मारा । अविनाश के पूरे बदन में बिजली का सा करंट दौड़ गया । अविनाश को कई डंडे पड़े और हर डंडे पर मुन्नी को ऐसे लगा जैसे वह मार उसके बदन पर पड़ रही है । पीटने के बाद मास्टरजी ने उसे मुर्गा बना दिया । मास्टरजी को जब गुस्सा आता तो वह अपने आपे में नहीं रहते थे··· उनके मुंह से झाग उड़ने लगते थे और चेहरे से एक अजीब पागलपन झलकने लगता··· कभी इधर से उधर जाते और कभी उधर से इधर आते, साथ हो बड़बड़ाते भी जाते—

'हरामजादा······बेहूदा···कमीने की शरारतें ही खत्म नहीं होतीं···देख ले इस कक्षा की दीवारों को···तू जिंदगी भर इन दीवारों से बाहर नहीं निकल सकता···भाड़ झौंकेगा भाड़···या सड़क पर झाड़ू लगाया करेगा···या चोर डाकू बन कर जायेगा ।'

गुस्से से बड़बड़ाते और टहलते हुए उन्होंने टोपी सिर पर रख ली और दूसरे ही क्षण उन्होंने बुरी तरह बिलबिला कर टोपी उतार फेंकी···उनकी गंजी खोपड़ी से एक बड़े से मेंढक ने लड़कों के ऊपर छलांग लगा दी···कक्षा में बैठे सारे लड़के हंस पड़े और मेज के पीछे खड़े मास्टरजी नाच गए । जिधर भी मेंढक जाता उधर से ही चीखें उठने लगतीं और लड़के-लड़कियां एक दूसरे पर गिर पड़ते थे ।

मुन्नी कक्षा से निकली और थके-थके उदास पैरों से अपने घर की ओर बढ़ने लगी । उसे मालूम था कि अविनाश उससे बहुत अप्रसन्न था । कक्षा से निकलते समय उसने मुन्नी की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखा था । उसका जी चाह रहा था । कि वह जोर-जोर से रोने लगे··· फिर उसे कुछ ध्यान आया और वह गलियों में से गुजरने की बजाए आमों के बाग की ओर से गुजरने लगी । वह जानती थी कि अविनाश जब गुस्से में होता है तो आमों के बाग में ही जा बैठता है ।

मुन्नी का अनुमान ठीक निकला । अविनाश आमों के बाग में ही था और वह छोटा सा दोसाखा तोड़कर गुलेल बनाने के लिए उसे छील रहा था···पास ही रबड़ रखी हुई थी । उसने मुन्नी को आते देखा और नथुने फुलाकर गर्दन झुका ली । उसकी आंखें गुस्से से लाल अंगारा हो रहा थीं । मुन्नी का दिल डूबनेलगा और वह चुपचाप अविनाश के पास जाकर खड़ी हो गई । उसका जी भर्रा रहा था लेकिन वह होंठों को भींचे हुए आंसुओं को रोकने का प्रयत्न करती रही···कुछ क्षण बाद उसने धीरे से कहा—

'निशु···!'

लेकिन अविनाश ने नजरें उठाकर भी उसकी ओर नहीं देखा···वह चुपचाप दोशाखा छीलकर गुलेल बनाता रहा । कुछ देर चुप रहकर मुन्नी ने भर्राई आवाज से कहा—

'निशु···मैंने तुझे मास्टरजी से पिटवा दिया···क्या तू मुझे मारेगा नहीं ?'

'···अविनाश के नथुने और भी अधिक फूल गये और वह अपने काम में लगा रहा ।'

'निशु···तू जरा-जरा सी बात पर सब को मारता है लेकिन मुझे कभी नहीं मारता ···क्या तुझे इतना भी अधिकार नहीं कि मुझे सजा दे ?'

अविनाश के कंठ से एक तेज क्रोध भरी गुर्राहट निकली और उसने कुर्ते की आस्तीन उठाकर जोर से अपनी कलाई में दाँत गाड़ दिये । मुन्नी पागलों की तरह उसकी कलाई उसके दाँतों से छुड़ाने का प्रयत्न करती हुई चिल्लाई ।

'निशु···छोड़ दे···भगवान के लिए··· निशु तुझे मेरी सौगंध···छोड़ दे···'

अविनाश ने सौगंध का शब्द सुनकर कलाई छोड़ दी···उसकी कलाई में दांतों के निशान थे । जिनमें से लहू बाहर निकल रहा था । मुन्नी रोती हुई अपनी ओढ़नी से उसका लहू पोंछने लगी···फिर जल्दी से उसने अपनी ओढ़नी से धज्जी फाड़कर उसे पट्टी बाँधनी चाही···लेकिन अविनाश ने उसे झटके से अलग कर दिया ।

'निशु···' मुन्नी रोती हुई बोली, 'देख बहुत लहू बह जाएगा···तुझे मेरी सौगंध··· पट्टी बंधवा ले ।'

अविनाश ने गुस्से से भरे हुए ही पट्टी बंधवा ली···मुन्नी ने रोते हुए कहा—

'तू मुझे सजा क्यों नहीं देता निशु··· मैं जब कोई भूल करती हूं तो भी तू अपने आप को ही सजा दे डालता है ।'

'भाग जा यहाँ से···' अविनाश गुर्राया, 'मैं तुझसे पूरे एक हफ्ता तक बात नहीं करूंगा ।'

'नहीं, नहीं निशु···' मुन्नी गिड़गिड़ाई, भगवान के लिए ऐसा मत कह ।'

'मैं कहता हूं मुन्नी चली जा यहां से··· मैंने जो कह दिया ।'

निशु···निशु···!'

निशु गुस्से में उसे परे धकेलकर गुलेल संभालकर पेड़ पर चढ़ता चला गया । नीचे से मुन्नी चिल्लाती रही, 'देख निशु अपने शब्द वापस ले ले नहीं तो मैं कुंए में कूद जाऊंगी ।'

'नहीं वापस लूंगा अपने शब्द···फिर कहता हूं···मैं तुझसे एक हफ्ता भर बात नहीं करूंगा ।'

'देख निशु···मैं कुंए में कूद जाऊंगी ।

अरे जा जा···कूद गई···' निशु पेड़ के ऊपर जमकर बैठता हुआ बोला ।

मुन्नी अचानक पास ही कुंए की ओर भागी और वह सचमुच कुंए में कूदने ही जा रही थी कि एकाएक दो सशक्त बांहों ने उसे पीछे से लपक लिया । मुन्नी आधी कुंए में लटकी हुई थी और उसे पकड़ने वाला व्यक्ति उसे ऊपर खींच रहा था । उस आदमी पर दृष्टि पड़ते ही मुन्नी की चीखें निकल गई··· उस आदमी ने चेहरे के ऊपर ढाटा बाँधा हुआ था ।

उस आदमी ने झटके से बल लगाकर मुन्नी को ऊपर खींच लिया । पास ही घोड़े पर ढाटा बाँधे एक और आदमी खड़ा था । मुन्नी डर से चिल्लाए जा रही थी । पहले ढाटा पहने आदमी ने मुन्नी को उठाते हुए घोड़े वाले आदमी को देना चाहा । घोड़े वाला ढाटा पोश मुन्नी को खींच ही रहा था कि सहसा घोड़े की पीठ पर एक बड़ा सा पत्थर तड़ाक से आ लगा और घोड़ा बिलबिलाकर दोनों टांगों पर खड़ा हो गया और दूसरा आदमी मुन्नी समेत पहले आदमी पर आ गिरा···घोड़ा दोलत्ती झाड़कर सरपट चला गया ।

(शेष पृष्ठ 31 पर)

पिछले दिनों एक अंतरिक्ष यान धरती पर उतरा था और उसमें आये खोपड़ीनुमां आदमी मोटू-पतलू, डा० झटका, चेलाराम और घसीटा राम का अपहरण करके अपने उपग्रह की ओर चल दिये थे। रास्ते में चेलाराम ने उन्हें अपना मित्र बना कर उनसे अंतरिक्षयान का कंट्रोल सीख लिया था और चालाकी से काम लेकर उन खोपड़ीनुमां आदमियों को यान से बाहर अंतरिक्ष में फेंकने में सफल हो गया था। और लाखों मील का सफर तै करके वे एक अनजाने उपग्रह पर उतर गये थे।

उस उपग्रह पर भी अजीब से प्राणी आबाद थे। और वहां के उपकरणों से पता चलता था कि वहाँ का विज्ञान हम से बहुत आगे है। वहाँ बहुत से टूटे-फूटे अंतरिक्ष यानों का मलबा पड़ा था, जिनसे पता चलता था कि या तो वह मलबा अंतरिक्ष की असफल उड़ानों का परिणाम है या यहाँ किसी दूसरे उपग्रह से आये स्पेसशिप इस उपग्रह वालों पर आक्रमण करते रहे हैं।

और वास्तव में एक आक्रमण उसी समय हो गया था। एक बहुत बड़ा यंत्र चीख मारता हुआ अंतरिक्ष से आकर उपग्रह पर उतरा था। और उसमें से निकले कम्प्यूटर युक्त लोहे के बहुत बड़े-बड़े पिंजरों ने आग उगल कर सब कुछ तहस-नहस करना शुरू कर दिया था। इस उपग्रह के वैज्ञानिकों की शक्ति उनके सामने तुच्छ थी। पर यहाँ भी चेलाराम की चतुराई काम आई थी और उसने लोहे के मशीनी आदमियों के दिमाग के पेच ढीले करके दिमाग इतने खराब किये थे कि वे आपस में ही लड़ मरे थे। और टूट-फूट कर लोहे का मलबा बन गये थे। उस उपग्रह के प्राणी इस बात पर बहुत खुश हुये थे। और वे घसीटा राम और चेलाराम को बगल में दबा कर भाग लिये थे। इसके बाद के हंगामे आगे देखिए।

इतने बड़े उपग्रह पर हम कहां ढूढ़ें उन्हें। पता नहीं वे आलू बुखारे चेलाराम को बगल में दबा कर कहाँ भाग गये हैं?

कैसे-कैसे यन्त्र बना रखे हैं यहां के वैज्ञानिकों ने! लगता है यह हमारी धरती पर आक्रमण करने की तैयारियां हैं।
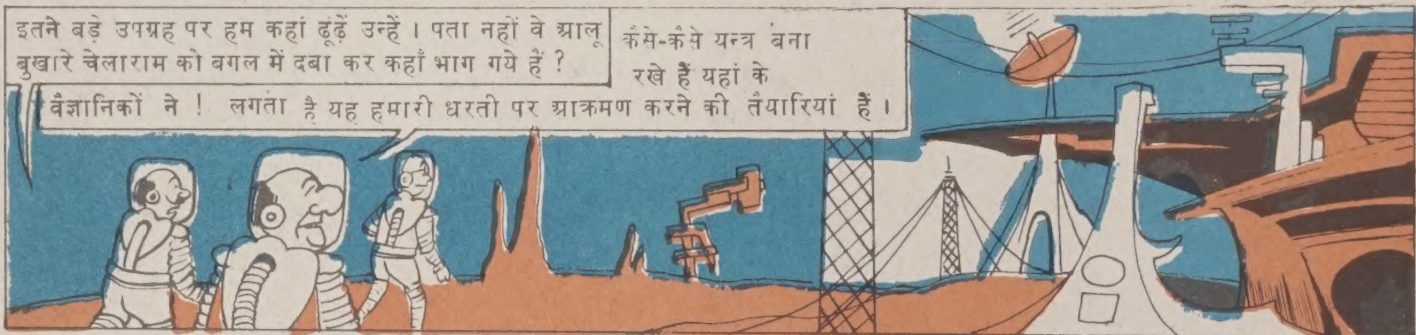
तैयारियां क्या हैं इतने भयंकर उपकरणों से तो लगता है कि यह किसी दिन हमारी धरती को रस्सी से बांध कर यहां खींच लेंगे।
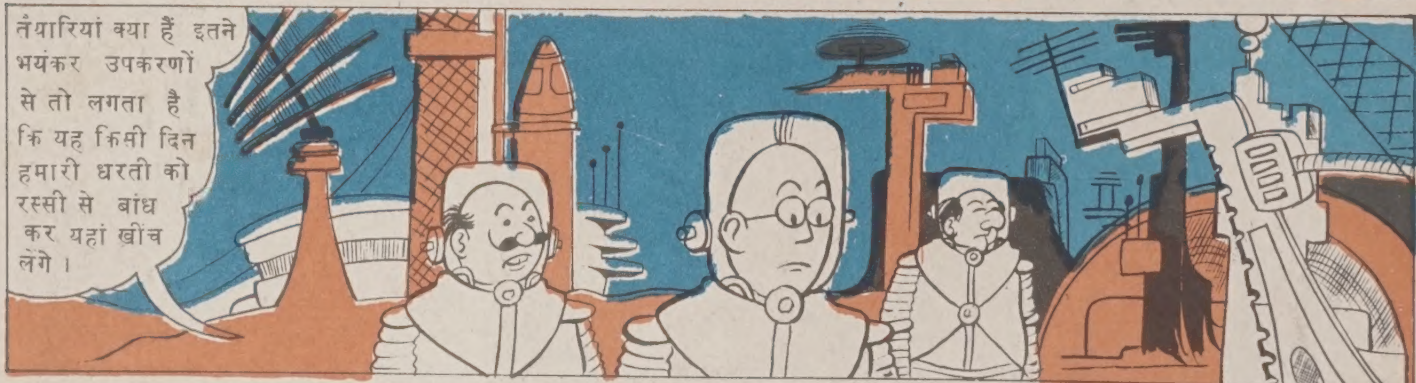
तभी कूयें में से दो आदमी निकले···
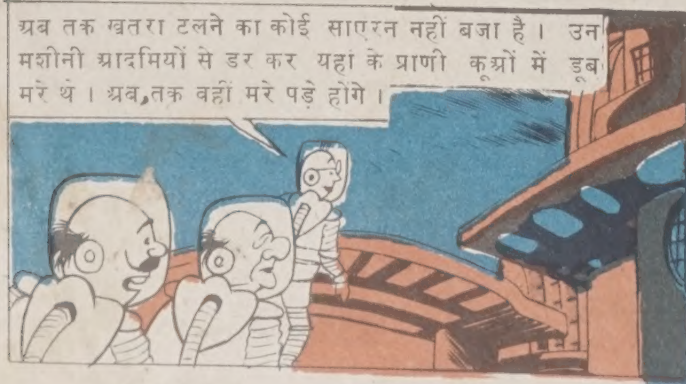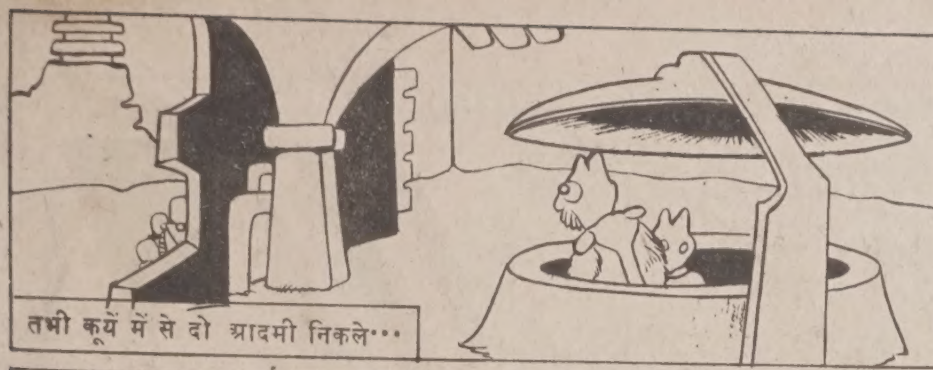
मोटू-पतलू कूयें पर पहुंचे तो उन्होंने देखा वहां कूयें में नीचे उतरने की सीढ़ियां थीं।

······ और एक ओर चल दिए।

और यह फैसला करने में उन्हें जरा देर नहीं लगी कि चेला राम और घसीटा राम को ढूंढना है तो उन्हें कूयें में उतरना पड़ेगा
तुम भी आ जाओ जल्दी से।

सीढ़ियों से उतरते वे बहुत नीचे पहुँच गये थे और नीचे ही नीचे उतरे जा रहे थे।

आखिर एक जगह पहुँच कर कूआ समाप्त हो गया।

अब वे एक ऐसी जगह खड़े थे, जहां एक सुरंग का दरवाजा खुला हुआ था।

सुरंग से आगे बढ़े तो अब वे जटिल और भयंकर मशीनों से बनी एक प्रयोगशाला में पहुंच गये थे।
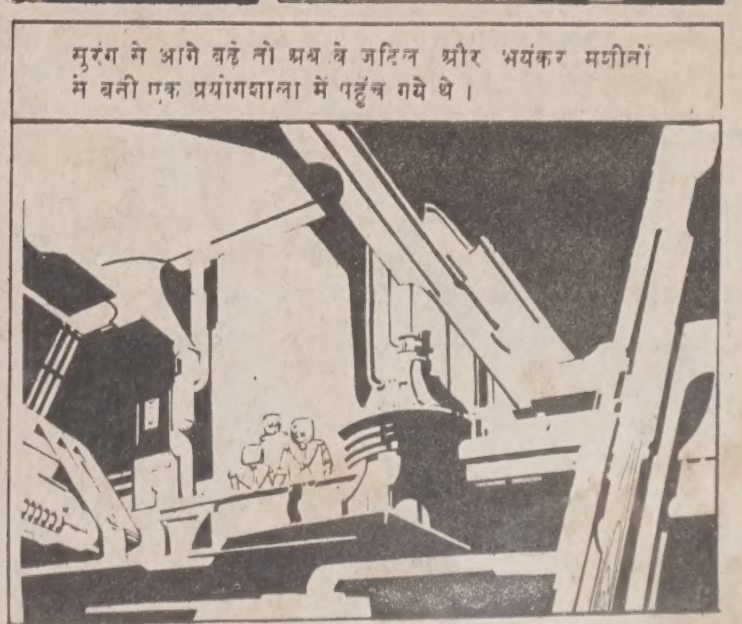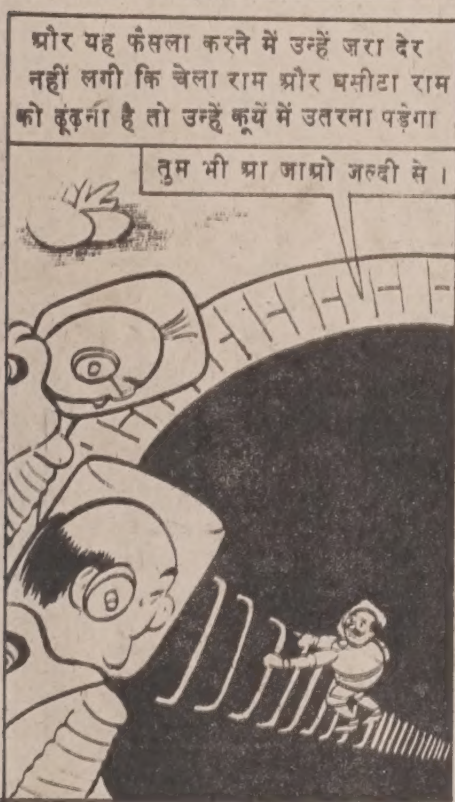
कहां आ मरे हम ? यहां से निकल कर भागने की नौबत आई तो रास्ता भी याद नहीं रहेगा।
यहां भी कोई दिखाई नहीं दे रहा है। कहां मर गये सब के सब ?
खुद तो कहीं भी नहीं मरे होंगे। पर हमारे शेरों को अब तक जिन्दा नहीं छोड़ा होगा उन्होंने।
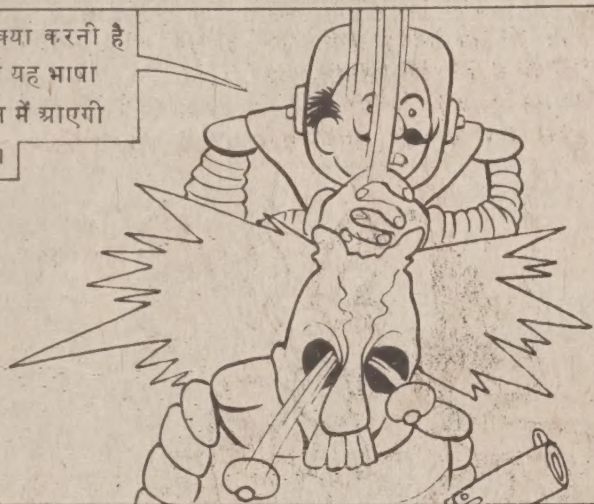
वह देखो, सामने कोई पहरेदार खड़ा है। उससे कुछ बात करके देखो।

बात क्या करनी है केवल यह भाषा समझ में आएगी इसे।
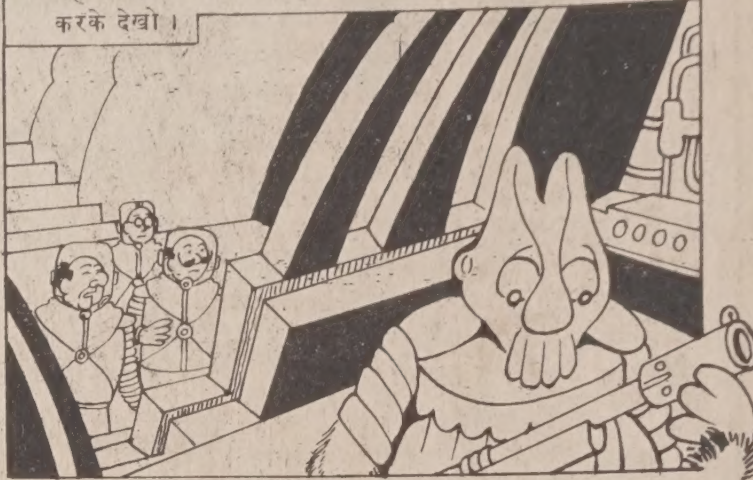
मोटू के एक ही वार ने पहरेदार को ढेर कर दिया और उसकी अजीबगन मोटू ने सम्भाल ली।

अब आये कोई माई का लाल मेरे सामने।
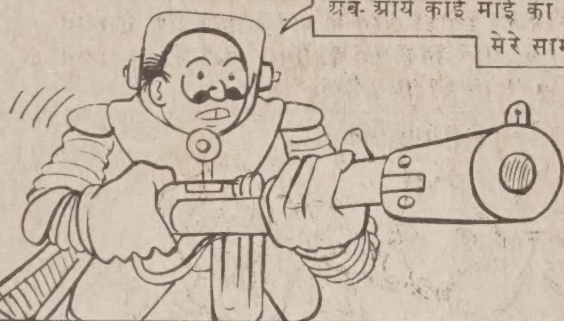
चलते-चलते अन्त में वे उस चैम्बर में पहुँच गये जहां घसीटा राम और चेलाराम पर वैज्ञानिक प्रयोग किये जा रहे थे।
लगता है यह लोग घसीटाराम का आम का अचार बना रहे हैं।

जरा सी भी आहट करने की बजाय इन्हें इस मुसीबत से छुड़ाने की कोई तरकीब सोचो।
मुसीबत से क्या छुड़ाओगे। घसीटाराम को तो इन्होंने जीता जागता मुसीबत का पिटारा बना दिया है।
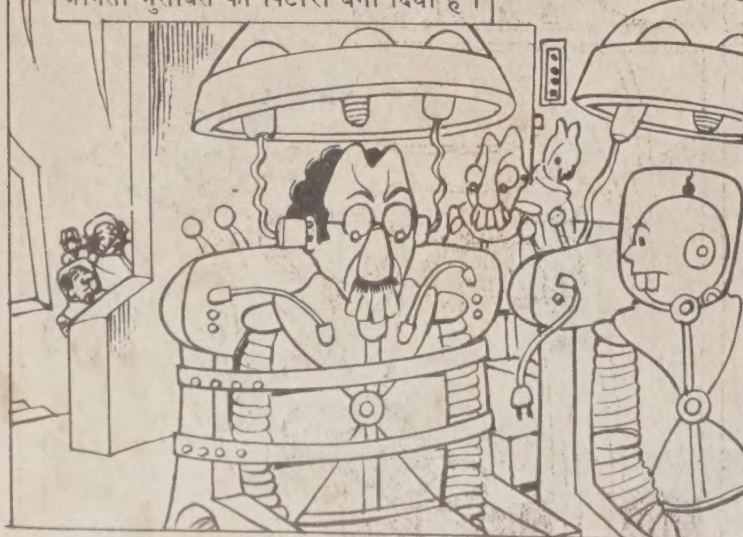
वहाँ के वैज्ञानिकों ने अपनी मशीनों और दवाइयों के कमाल से अब तक घसीटाराम का कुछ से कुछ बना दिया था।
हीरे दे दो। चाहे मेरी जान ले लो पर मुझे तो बहुत सारे हीरे दे दो।
आदमी से बन्दर बना दिया है इन लोगों ने।
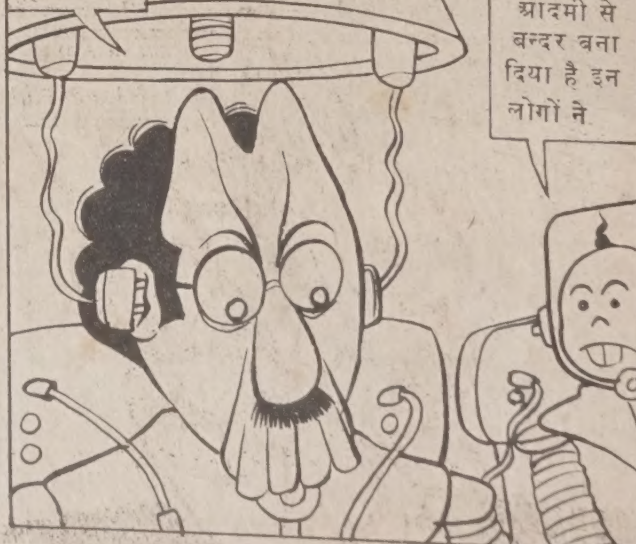
पर हीरों का मोह अब भी नहीं गया दिमाग से।
जिन्टू शिन्टू···किट···किट···किट
उनके प्रयोग अभी समाप्त नहीं हुये थे। अपने आखिरी प्रयोग के लिये अब वे अपना मशीन सेट कर रहे थे।
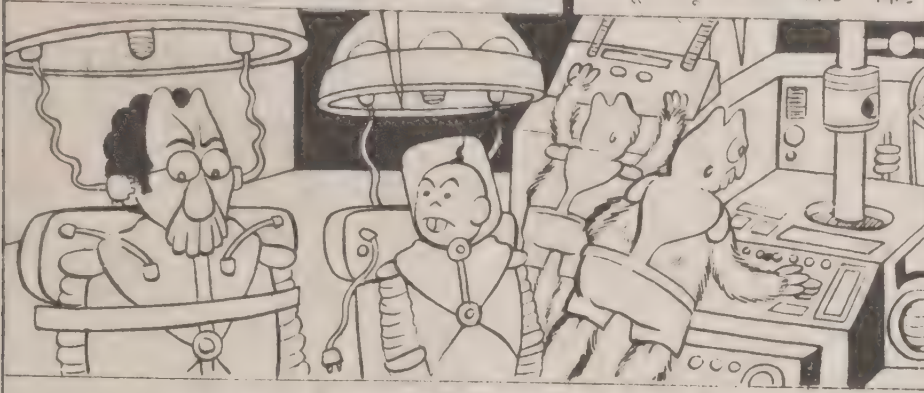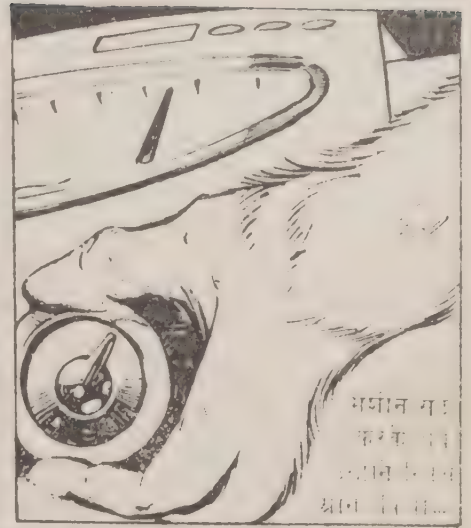
...तो घसीटा राम के मुह से चीख निकल गई।
आ ह
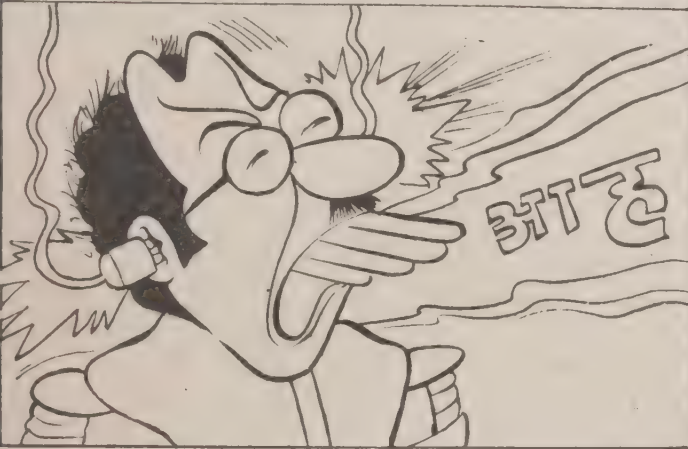
लगता था अब उनका प्रयोग पूरा हो चुका था। घसीटा राम को वे जो कुछ बनाना चाहते थे वह बन चुका था। अब तक तो केवल उसकी शक्ल ही बदली थी पर अब वह अपनी भाषा भूल कर उनकी भाषा बोलने लगा था।
गिट गिट···गिट ···गिट···गिट

क्या गिरगिट की तरह रंग बदला है। अब बताओ, क्या अब भी हीरों का लालच है तुम्हारे दिमाग में?
ददीगम···ददीगम···लचीलम···लचीलम।
क्या लचीलम लचीलम की रट लगाई है। दिमाग की गाड़ी बिलकुल ही पटरी से उतर गई क्या?

घसीटाराम का कबाड़ा करने के बाद शायद अब चेलाराम की बारी थी और उनके एक वैज्ञानिक ने इंजेक्शन लगाने के लिए चेलाराम को पकड़ लिया था।
चीन चिंकू···चीन चिकू।
अबे ओ चिकू के चाचा..

आ मैं बताऊं यह इंजेक्शन कहां लगेगा।
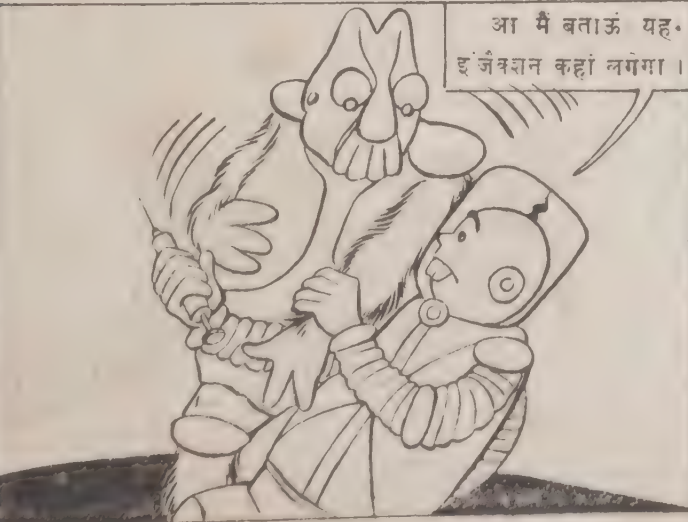
पेट में इंजक्शन लगते ही वह डाक्टर अनाज की बोरी की तरह नीचे गिरा और गिरते ही ठंडा हो गया।
गिरने की आवाज से उसके दो अन्य साथी चौंके और चेलाराम को पकड़ने के लिए लपक पड़े।
चेलाराम ने सोचा, अपने बचाव के लिए यह लोहे का डंडा निकाल लूं।
पर वह कोई साधारण डंडा नहीं था। मशीन का एक लीवर था और वह लीवर चेलाराम के हाथ से नीचे दब गया था!
और लीवर के दबते ही एक भारी मशीन ने उन दोनों वैज्ञानिकों को दबा दिया और अब वे इतनी जोर से चीख रहे थे, जैसे खतरे के दो सायरन दहाड़ मार रहे हों।
ची..ची..???
ची..ची..??
अरे तुम यहां कैसे पहुंचे?
कैसे भी पहुंचे। अब तुम घसीटाराम को साथ लो और यहां से भाग लो।
इसे साथ लेकर क्या करोगे? यह तो अब यहां के जानवरों जैसा ही हो गया है। शक्ल के साथ-साथ, भाषा भी बदल गई है।
तभी मशीन के नीचे दबे चीखने वालों की आवाज सुनकर उनके और साथी सहायता के लिए आ गये।
अरे यह तो गैस की बंदूक है।
इस बन्दूक को देखूं, यह इन आलू बुखारों को ठिकाने लगाती है, या नहीं।
गैस के बादलों ने इन्हें अधमरा कर दिया है। अब तुम यहां से भाग लो।
जिस रास्ते से आये थे वह उन्हें अच्छी तरह याद था। इसलिये वहां से भागने में उन्हें अधिक कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ रहा था।
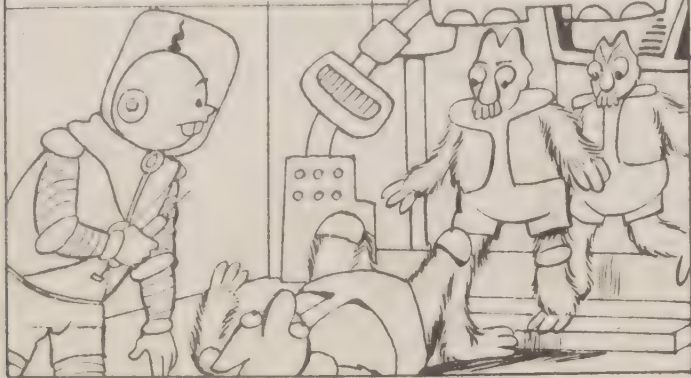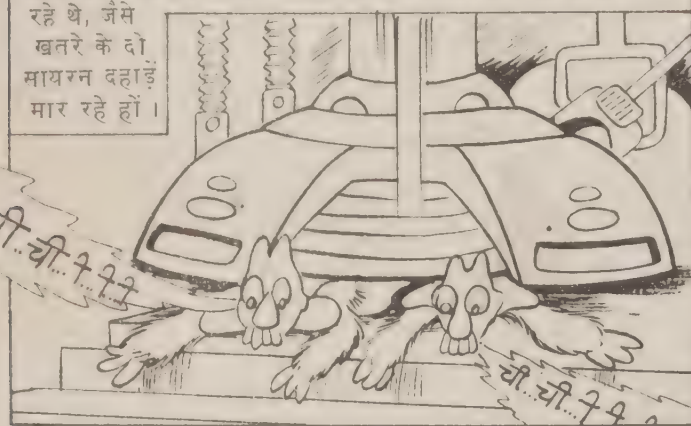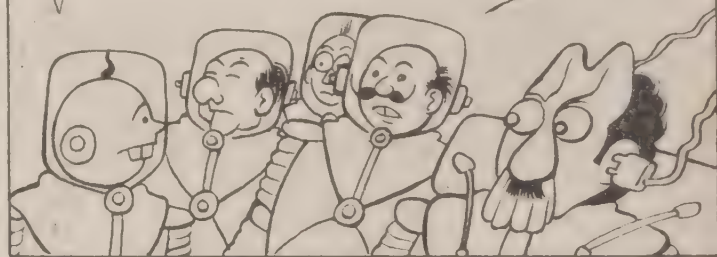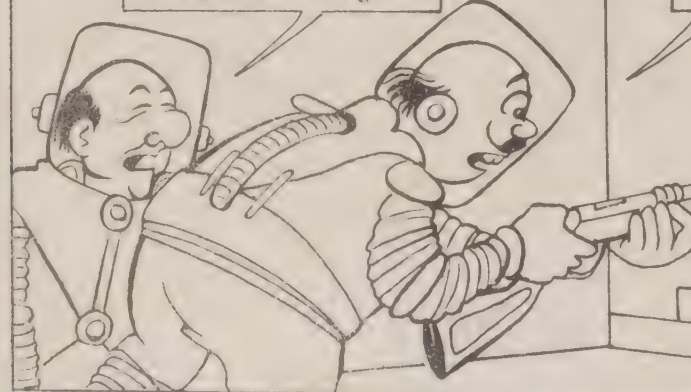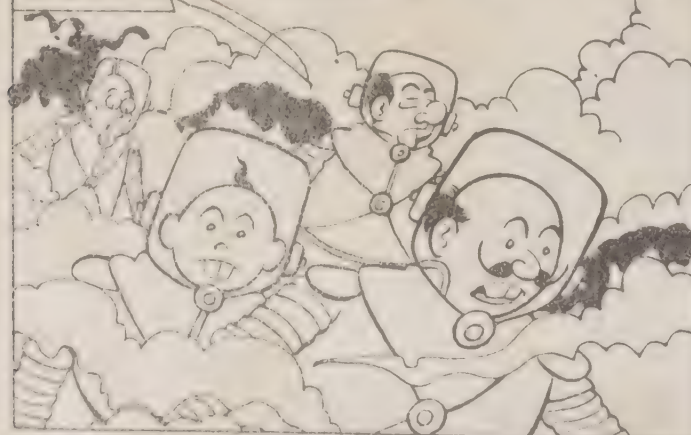
ऊपर से कूयें का मुंह खुला हुआ है। फटाफट ऊपर चढ़कर यहां से बाहर निकलो।
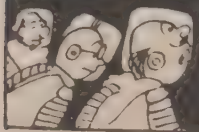
उनका कोई साथी दिखाई नहीं दे रहा है, लगता है, खतरे का सायरन बजा कर सब अपने-अपने कूओं में जा मरे हैं।

मुड़कर पीछे देखने की बजाये अब अपने अतरिक्षयान की ओर भागे चलो।
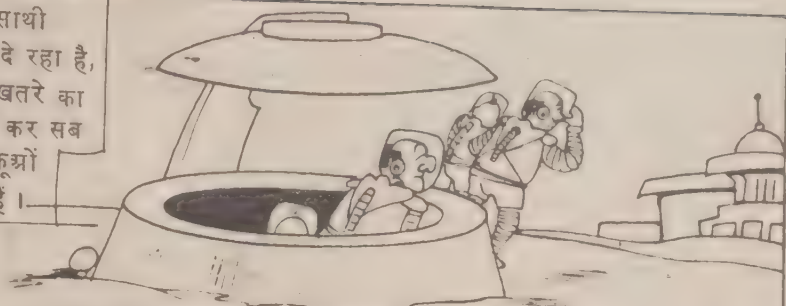
इससे पहले कि यहाँ किसी दूसरे उपग्रह वाले हमला करें या इस उपग्रह वालों को होश आये तुम अपना यान लेकर यहां से कूच कर जाओ।

पर इससे पहले ही इस उपग्रह वालों को होश आ चुका था, और शायद वे भागने वालों के बारे में घसीटाराम से पूछ-ताछ कर रहे थे।
किड़ किड़…गिड़ गिड़…किड़ किड़ किड़ किड़
चलचम चलचम…भगनम भगनम।
भगनम भगनम…
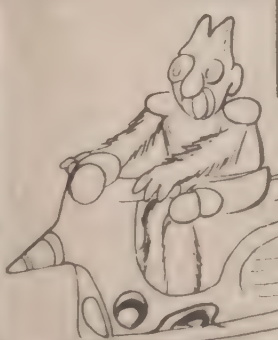
तुरंत ही उनका फ्लाईंग स्कवैड घसीटाराम की। सहायता से उस ओर उड़ा जा रहा था जहां से मोटू-पतलू,डा० झटका और चेलाराम अन्तरिक्ष में उड़ान भरने वाले थे।

अरे अन्तरिक्ष यान का दरवाजा बन्द कर जल्दी से, नहीं तो कोई अन्दर घुस आएगा।
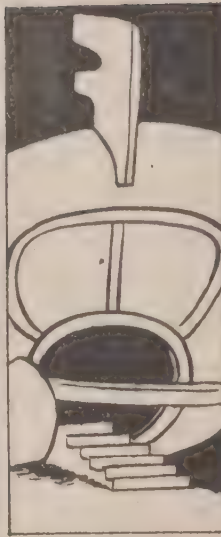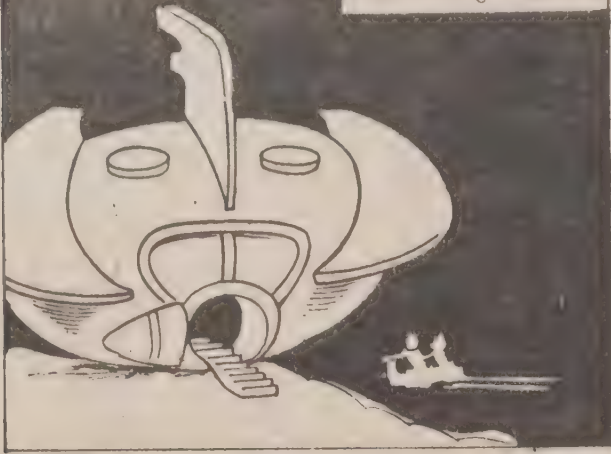
स्कूटरों पर पूरी फौज आ गई है इनकी। आ जाने दो, अब क्या होता है ? मैंने अन्तरिक्षयान का दरवाजा बन्द करके इसके इंजन चालू कर दिये हैं। अब हम अन्तरिक्ष में उड़ान भरने ही वाले हैं।
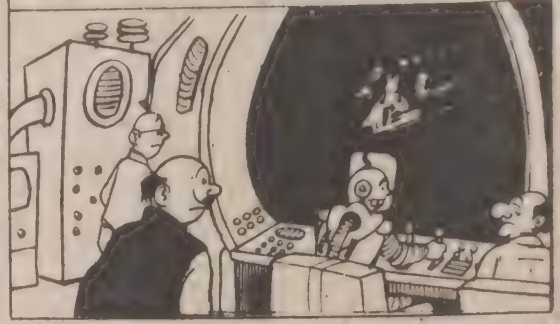
"परफैक्ट टेक आफ" है। हे इस उपग्रह के वासियों, तुम्हें हमारा आखरी सलाम।
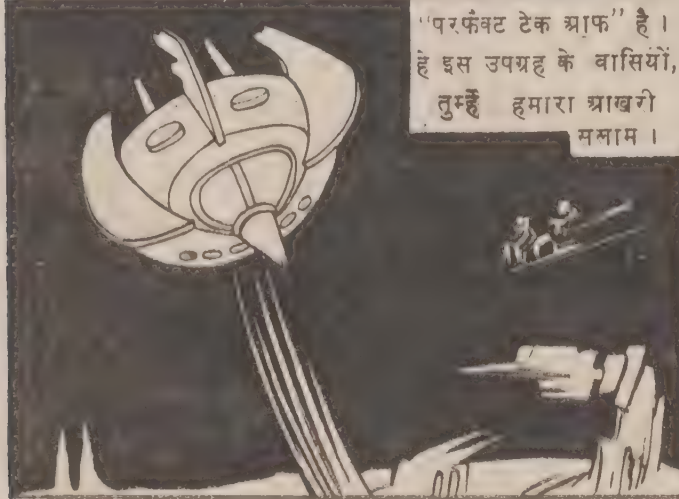
हमारे राडार की सूई बता रही है कि इस समय हम अपनी धरती से बाईस लाख मील दूर हैं।
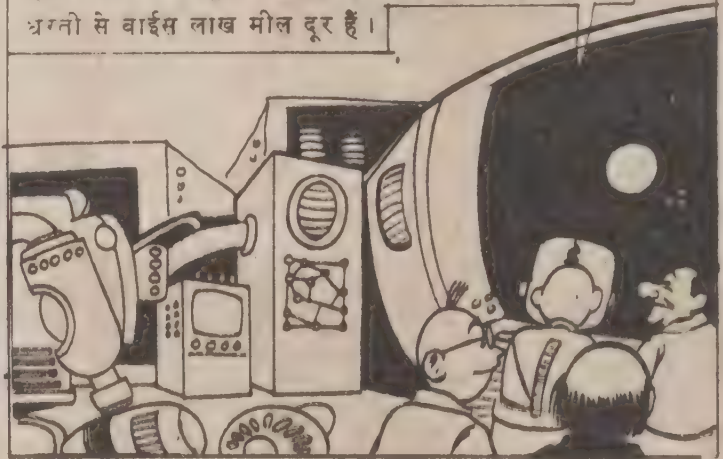
देखो, अन्तरिक्ष में हमारी धरती साफ चमक रही है। मैंने अब अपने यान की दिशा उस ओर मोड़ दी है।
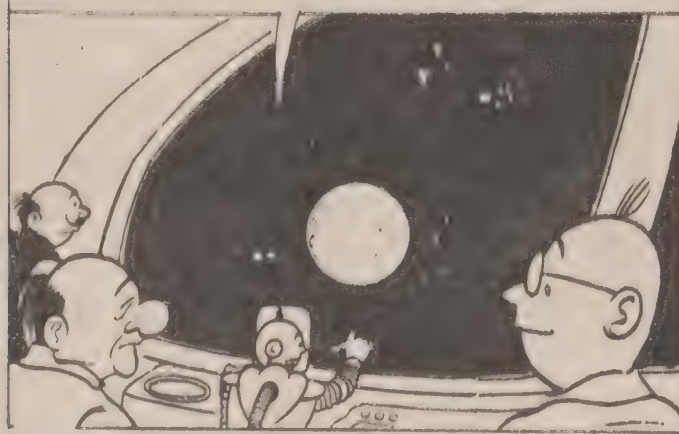
चलो जान बच गई, अब आराम से अपनी दुनिया में पहुंच जायेंगे।
कौन पहुंचने देगा आराम से ? जरा पीछे मुड़कर देखना यह कौन खड़ा है ?
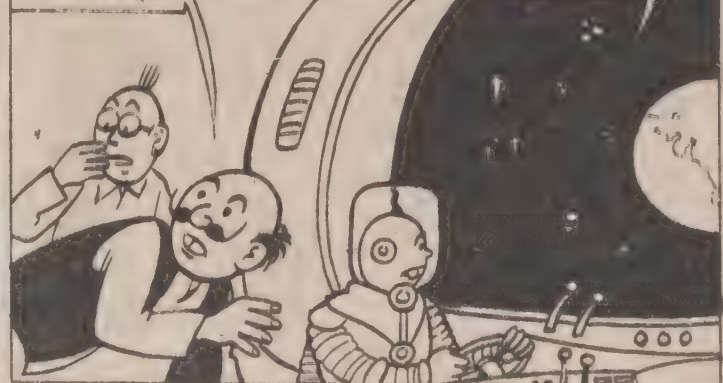
अरे बाप रे, यह करेले की दुम कैसे आ गया यान के अन्दर।
टिरकू टिरकू'''टिक टिक टम'''!
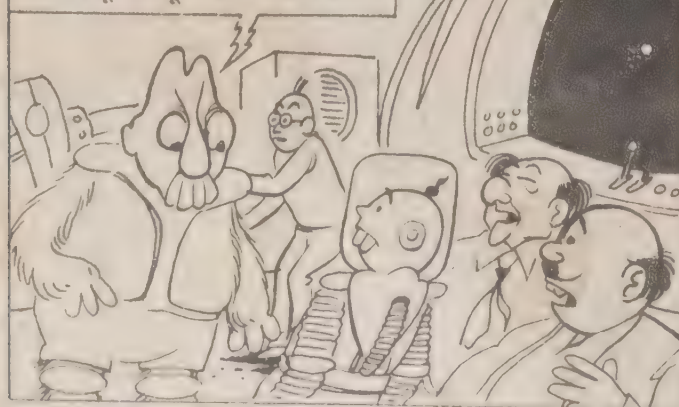
OUT
टिक टिक टम के भाई तेरा भी वही इलाज करना पड़ेगा जो मैंने तीन खोपड़ियों का किया था। जरा इस 'आऊटलेट केबिन" के अन्दर तो धँस जा।

आगामी अंक में देखिये हंगामों से भरी एक नई कहानी ।
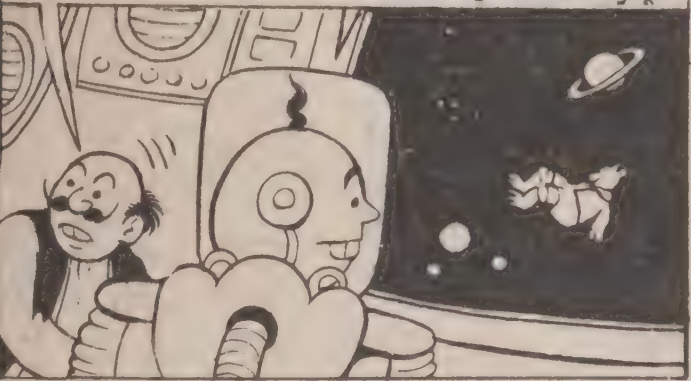
जूडो कैराटे कैसे सीखें?

इस तरह गिरते समय यह स्वाभाविक ही है कि आपके पैर आगे की ओर आ जायेंगे, लेकिन यह ध्यान रखें कि जैसे ही आपके पैर आगे की ओर आयें, उन्हें घुटनों से मोड़ लें, ताकि जमीन पर आपकी एड़ी के साथ-साथ पैरों के तलवों का भी स्पर्श हो, ताकि आपके पैरों को झटका न लगे। जैसे ही आपके पैरों के तलवे गद्दे पर लगें, आप सीने को ऊपर की ओर उठायें और कोहनी से हाथों को मोड़कर सीने को ऊपर की ओर उठायें और फिर पैरों पर जोर डालते हुए आगे की ओर उठने की कोशिश करते हुए कोहनी को ऊपर उठाते हुए हाथों की हथेली को जमीन पर टिका दें और हथेलियों पर शरीर का भार डालते हुए आगे की ओर फुर्ती से उठने की कोशिश करें।

गिरने की स्थिति को क्रमवार समझाया गया है। इस लिए इसी क्रम से धीरे-धीरे गिरने उठने का अभ्यास करें। शुरू में अभ्यास करते समय गिरने की गति कम रखें, क्योंकि इस तरह से गोलाकार रूप में गिरने से आपको चक्कर आ सकते हैं। लेकिन एक-दो दिन बाद आपको आदत पड़ जायेगी और आप बिना किसी कठिनाई के आसानी से यह अभ्यास कर सकते हैं। इस प्रकार से गिरने के अभ्यास में अपने दोनों हाथों की स्थिति का ध्यान अवश्य रखें और आपके हाथों की पोजीशन चित्रों में दिखाये अनुसार ही होनी चाहिए। जब आप धीमी गति से आगे की ओर गिरना सीख लें तो धीरे-धीरे गिरने की गति भी बढ़ाते जाइये, ताकि मौका पड़ने पर यदि आप तेजी से गिरें तो अपने-आपको सुरक्षित रूप से बचा सकें। जब आप गिरने की इस स्थिति का अभ्यास अच्छी तरह कर लेंगे और आपका शरीर ठीक से गोलाकार में आने लगेगा तो एक स्थिति ऐसी आयेगी कि अब आप तेजी से आगे की ओर गिरेंगे तो आपको उठाने के लिए हाथों का उतना सहारा नहीं लेना पड़ेगा और जमीन पर आपको पैरों के तलवे जैसे ही लगेंगे—आप उसी गति का सहारा लेते हुए सीधे खड़े हो जायेंगे। फिर तो यह होगा कि इधर आप गिरे और उसी क्षण उधर आप खड़े हो गये।

पीछे की ओर गिरते समय

जिस प्रकार आपने आगे गिरने के लिए सही ढंग की जानकारी ली, उसी तरह पीछे की ओर गिरने का भी क्रमवार अभ्यास कीजिए।

जब कोई व्यक्ति धक्का देने से या फिसल जाने से पीछे की ओर हाथ ले जाता है। इसका नतीजा यह होता है कि वह ठीक ढंग से संभल तो पाता नहीं है। साथ ही हाथों को भी गंभीर चोट पहुचती है। यहां तक कि हाथ टूट तक जाता है क्योंकि हाथ शरीर का भार तीव्र गति से गिरने के कारण संभाल नहीं पाते और क्षतिग्रस्त हो जाते हैं।

इसलिए पीछे गिरने पर जमीन में हाथ या कोहनी नहीं टिकानी चाहिए। सुरक्षित रूप से गिरने के लिए अध्ययन कीजिए और गद्दे या घास पर गिरने का अभ्यास कीजिए।

पीछे की ओर गिरने का अभ्यास करने के लिए सीधे खड़े होकर शरीर को ढीला छोड़ दें।

फिर कमर के पास से शरीर को थोड़ा आगे की ओर मोड़ें। हाथों को आगे की ओर फैला लें और एक पैर को घुंटने से मोड़कर आगे की ओर उठा लें। फिर धीरे-धीरे जमीन पर रखे हुए दूसरे पैर का घुटना मोड़ते जायें और पीछे की ओर शरीर को झुकाते जायें साथ-साथ ही कमर के पास से भी शरीर को मोड़ते हुए गोलाकार स्थिति तक ले आयें। याद रखें—जब पीछे की ओर गिरें तो जमीन के सबसे पहले कमर के नीचे का गुदगुदा भाग यानी कूल्हे (हिप्स) जमीन पर लगे। सिर को ऊपर की ओर यानी छाती की ओर झुकाए रखें, ताकि कमर के भाग के बाद आपकी पीठ का गोलाई लिए हुए वाला भाग जमीन पर लगे। सिर जमीन पर न लगने पाये। अब आप पूरी तरह जमीन पर गिर जायें तो दायाँ या बायाँ हाथ जमीन पर उसी दिशा में फैला दें। ध्यान रहे, यदि दायां हाथ जमीन पर फैलायें तो दायाँ ही पैर जमीन से ऊपर उठा होना चाहिए, जो घुटने से थोड़ा मुड़ा हुआ हो।

अब मान लीजिए, आपने दायाँ हाथ फैलाया है और दायाँ ही पैर जमीन से ऊंचा रखा है। अब फुर्ती से फैले हुए हाथ की दिशा में करवट लीजिए और बायें पैर को घुमाकर लाते हुए जमीन पर टेककर बायें हाथ को भी फुर्ती से आगे लाइये और फिर टिके हुए हाथ-पैरों के सहारे उठ खड़े होइये।

इस अभ्यास को बार-बार दोहराइये और फिर धीरे-धीरे गिरने की गति बढ़ाते जाइए।

दायें या बायें गिरने पर

दायीं या बायीं तरफ गिरने के लिए भी सावधानी की बहुत जरूरत है। बेढंगेपन से गिरने से आपके किसी भी हाथ तथा कान या कनपटी पर गम्भीर चोट लग सकती है।

बायीं या दायीं तरफ गिरने पर तुरन्त उसी दिशा के पैर को घुटने से मोड़ लें और ऐसी स्थिति लायें कि जमीन पर सबसे पहले कूल्हों के किसी भी भाग का स्पर्श पहले हो; क्योंकि कूल्हों पर मांस ज्यादा होने से वे गुदगुदे होते हैं और शरीर का भार सहन कर सकते हैं। जैसे ही कूल्हे का स्पर्श करें—आप स्थिति के अनुसार जमीन पर हाथों को टेक दें। हाथ कोहनी से थोड़े मुड़े हुए हों। हाथों की हथेलियां अन्दर की ओर

फैली हुई हों। अब हाथों और घुटनों का सहारा लेते हुए उठ खड़े होइए।

दायें या बायें किसी भी तरफ गिरें, उठने और गिरने का तरीका यही होगा। केवल दिशा के अनुसार उसी तरफ के हाथ-पैर या कूल्हे का सहारा लें।

अब आप गिरने और उठने के सभी दिशा के तरीके भली-भांति समझ गये होंगे। इन तरीकों का अच्छी तरह अभ्यास कीजिए और गिरने की किसी भी स्थिति का बिना चोट खाए सामना कीजिए।

तुम्हें तो सब वाहर-बाहर से दुत्कार देते हैं तो इसमें मेरा क्या कसूर ? अपनी-अपनी किस्मत की बात है। लोग मुझे आंखों में बसाते हैं।
कांटेक्ट लैंस।
कुछ बातें कुछ घातें
जा जा बड़ी आई। मैं नहीं तेरी तरह किसी के मुंह लगती।
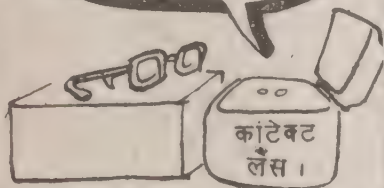
जब भी मैं कुछ कहता हूं तुम तो मुझे काट खाने को दौड़ती हो।
हम तो बात सीधी कह देते हैं ! तुम्हारी तरह घुमा-फिर कर नहीं कहते !
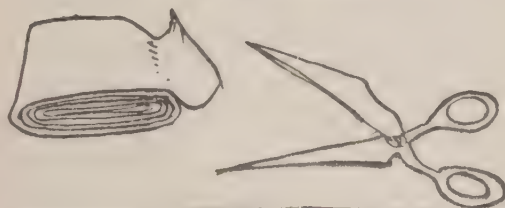
हाय ! तुमसे मिलने को जी कितना बेताब हो रहा है।
WHISKEY
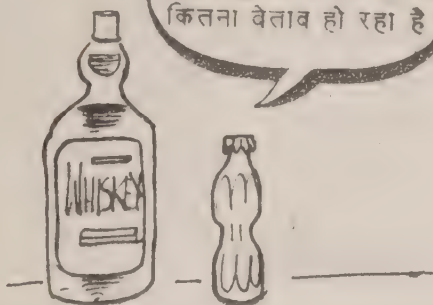
कभी तो प्रेम से मिल बैठने की बात सोचा करो तुम ! जब देखो तब मुझे जलाने पर तुली बैठी रहती हो।
10 CIGARETTES

आओ तुम्हें एक चटपटी बात सुनाऊं।
GARAM MASALA
KING
RAT VA
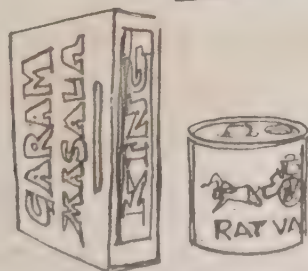
मुझसे ज्यादा न उलझना। मैं तुम्हारा नामो निशान मिटा दूंगा !
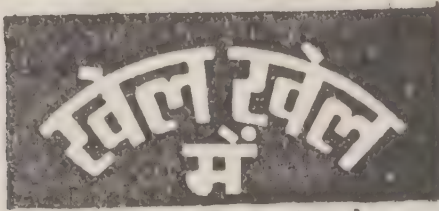
वैस्ट इंडीज कैलीप्सो फैशन

जहां वेस्टइंडीज का जिक्र आयेगा वहां क्रिकेट के साथ-साथ संगीत भी दिमाग में उभरता है। वेस्टइंडीजवासी अपने संगीत प्रेम के लिये प्रसिद्ध हैं। जब कालीचरण के नेतृत्व में वेस्टइंडीज की टीम इस वर्ष भारत आई थी तो वेस्टइंडीज खिलाड़ियों के सामान की मुख्य वस्तु थी टेपरिकार्डर और कैलीप्सो संगीत के कैसेट। कैलीप्सो वहां का प्रसिद्ध संगीत है जिसकी धुन पर पैर स्वयं थिरकने लगते हैं। वेस्टइंडीजवासियों ने क्रिकेट और संगीत का अनूठा संगम प्रस्तुत किया है। जब विदेशी टीम वेस्टइंडीज के दौरे पर पहुंचती है तो क्रिकेट प्रेमी हवाई अड्डे से उन्हें कैलीप्सो संगीत पर नाचते हुये होटल तक ले जाते हैं। यही नहीं कैलीप्सो धुनों पर आने वाली टीम पर गीत लिखे जाते हैं और बाकायदा उसके रिकार्ड बिकते हैं। वेस्टइंडीजवासी विदेशी टीमों की प्रशंसा में ऐसे कसीदे लिखते हैं कि मजा आ जाता है। पिछली बार जब भारतीय टीम वेस्ट-इंडीज गयी थी। होल्डिंग ने तेज गेंद बाजी कर हमारे कई बैटसमैनों को घायल किया था। उस समय आप सोचते होंगे कि यह लोग बड़े जाहिल हैं। ऐसी बात नहीं है। वेस्ट इंडीज के लोग बहुत भावुक, जोशीले और जिंदादिल होते हैं। अपने प्रतिद्वन्दी की खूब प्रशंसा भी करते हैं। सन् १९७१ में जब भारतीय टीम ने वेस्टइंडीज को पराजित किया था तब भारतीय टीम के वहां पहुंचने पर वेस्टइंडीज वालों ने जो कैलीप्सो धुन पर गाना तैयार किया था उसका हम हिन्दी अनुवाद कर रहे हैं। आपको गाना पढ़ खुद पता लग जायेगा कि वेस्टइंडीज के लोग कितने जिन्दा दिल हैं और मेहमानों का कितना आदर करते हैं।

कैलीप्सो गीत

●(भारतीय टीम १९७१ के स्वागत में)

क्रिकेट के लिये शुभ दिन आया,
नीला आकाश और मीठी हवा का झोंका ॥
भारतीय उतावले हैं कब आये,
वेस्ट इंडीज में खेलने का मौका ॥
एक इशारा अम्पायर का,
और मैच हो जायेगा स्टार्ट ॥
क्रिकेटर आते हैं मैदान पर,
देखो लगते सब कितने स्मार्ट ॥
एरापल्ली प्रसन्ना,
जीजी बॉय और वाडेकर ॥
कृष्ण मूर्ति और विष्णु मनकड,
(यहाँ गलती से वे अशोक मनकड की जगह विष्णु मनकड कह गये)।
ये सब खेलते हैं धमाकेदार क्रिकेट,
चाहे कैसी भी क्यों न हो विकेट,
इनके सामने वेस्ट इंडीज की टीम हो जाती है गड़बड़,
वेस्ट इंडीज के पसीने छूट गये,
जो कैरु के नस फूट गये,
क्लाइव लायड हुआ रन आऊट तीन बार,
कैसी हो गयी हमारी टीम बेचारी लाचार,
यह था गावस्कर, असली खिलाड़ी,
अड़ जाता था जैसे हो पक्की दीवार,
हमारे गेंदबाज पा न सके उससे पार,
हो गये लाचार, हो गये लाचार।
वेंकट राघवन,
बेदी अपने पटके में,
जय सिन्हा और जयन्ती लाल,
सबीना पार्क और क्वीन्स पार्क ओवल में,
सीरीज जीत कर,
वेस्ट इंडीज का किया बुरा हाल बुरा हाल ॥
एक सौ और अट्ठावन बनाये कन्हाई ने,
नोरजीया ने ९५ रन नौ विकेट चटकाये,
लेकिन भारतीय टीम से फिर भी,
हम जीत न पाये, जीत न पाये ॥
गोविन्दराज और दुर्रानी, सोलकर और आबिद अली,
दिलीप सरदेसाई व विश्वनाथ इनके आगे हमारी एक न चली,
जब ये दौड़े आते हैं बल्ले बाजी को,
ग्रहण लग जाये होल्डर व वायस की गेंदबाजी को,
हारकर उद्दन डो को भी ले आये,
लेकिन वह भी अब क्या कर पाये ॥
नन्हे ड्रमण्ड लेवी और चार्ली डेवी
दोनों ने कुछ रखी हमारी लाज
लेकिन कप्तान सोबर्स का तो भाई
कोचिंग लेने फौरन भेज दो आज
बेदी के लड़का हुआ
इस खुशी में कवर में उसने हाफवाले का कैच पकड़ा
सोबर्स के भी लड़का हुआ
लेकिन इस खुशी में उसने शून्य बना पैवेलियन का रास्ता पकड़ा।
(इस सीरीज के दौरान दोनों के पुत्र पैदा हुये थे।
यह था गावस्कर असली खिलाड़ी,
अड़ जाता था जैसे हो पक्की दीवार
हमारे गेंदबाज पा न सके इससे पार,
हो गये लाचार हो गये लाचार।
(अब आप स्वयं सोचिये क्या हम विदेशी टीमों को इतना आदर और प्रेम दे सके हैं? क्या हार को इसी जिन्दादिली से स्वीकार कर पाते हैं?)

लालाजी, आप हमारे हॉकी खिलाड़ियों में से किसी एक को मुनीम रख लीजिये। वह किसी मैच में गोल नहीं कर पाते तो हिसाब ही कौन सा गोल कर पायेंगे

फैण्टम — जंगल शहर

क्या तुम वे लोग हो जो बदमाशों के साथ फंसे हो···?
हां।
बहुत खराब है।
अरे क्या यही बदमाश है?

अरे यह तो बिलकुल चित्त पड़े हैं। क्या किसी ने लाठी से मारा है?
नहीं जी, उस नकाब पोश ने···

कौन नकाब पोश?
वही जिसने तुम्हें इनके बारे में बताया।

क्या इन दोनों ने तुम पर हमला किया?
बटुआ अभी तक इसके पास है जेब में।
जी हजूर इसी ने मेरा बटुआ चुराया।
और चाकू और पिस्तौल भी।

बेटा, मैं तुम्हें इतनी हिम्मत करने पर बधाई देता हूं।
मुझे नहीं, उस नकाब पोश को दीजिये।

यह एक नकाब पोश की बात करता रहता है, मैंने तो किसी को देखा नहीं।

नकाब पोश ने प्रेमियों को पार्क में बचाया।

तुम्हें कुछ पता है, यह नकाब पोश कौन था?
बड़ा रहस्यपूर्ण लगता है।

मुझे तुम्हारी बहुत फिक्र है। क्या तुम रात को फिर जाओगे?
हां, जब तक मैं डेव पर हमला करने वालों को और उसके बैज को न ढूंढ़ लूं।

मिस बारबरा पार्क में रात को अकेले जाना बिल्कुल बेवकूफी है।
क्यों? आज तो पूर्णमाशी है और मैं तो हर-रोज ही रात को सैर करती हूं।
तुम्हें मेरे साथ आने की कोई जरूरत नहीं है।
मैं नहीं चाहता कि तुम अकेली जाओ।

ठांय
ओह:
अह:
अचानक बन्दूक की गोली···
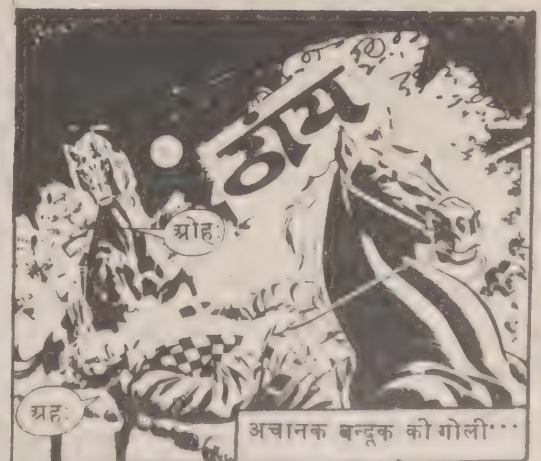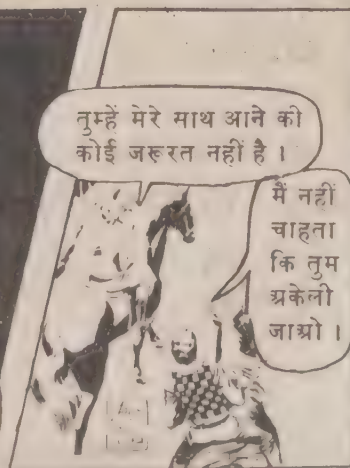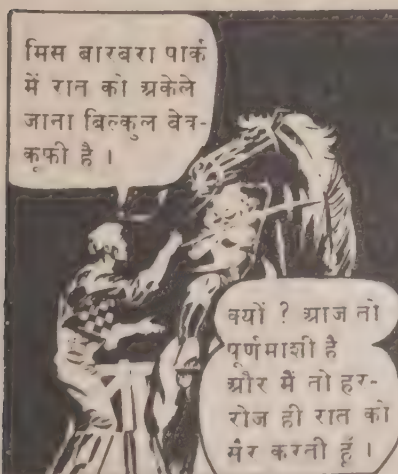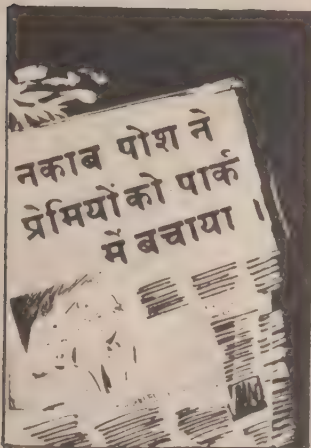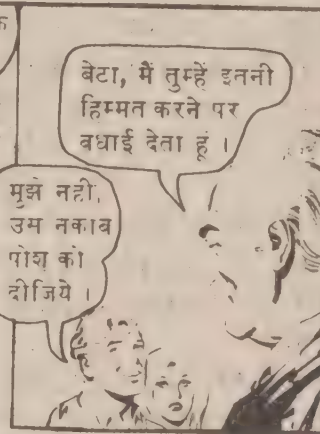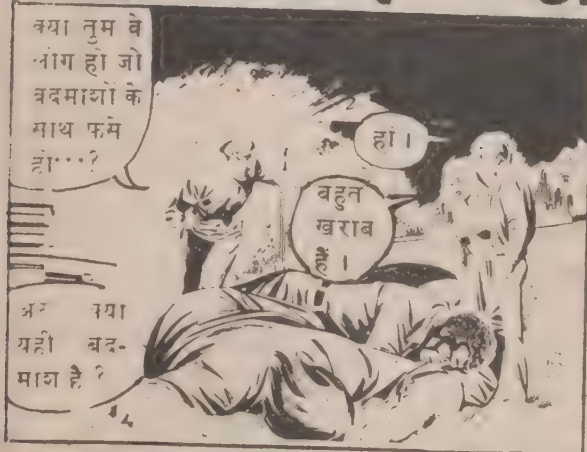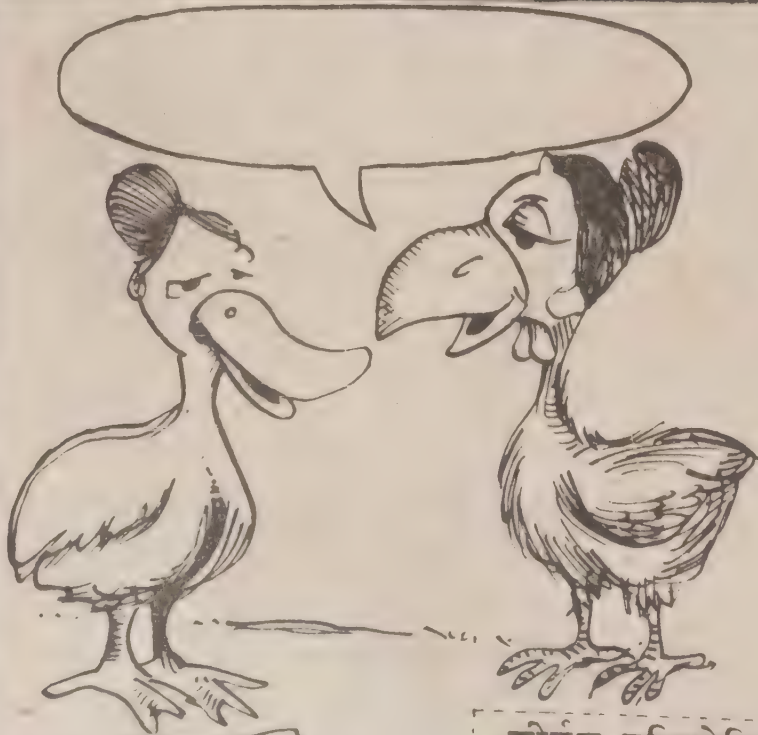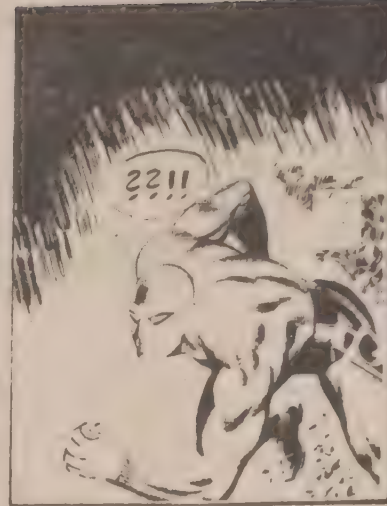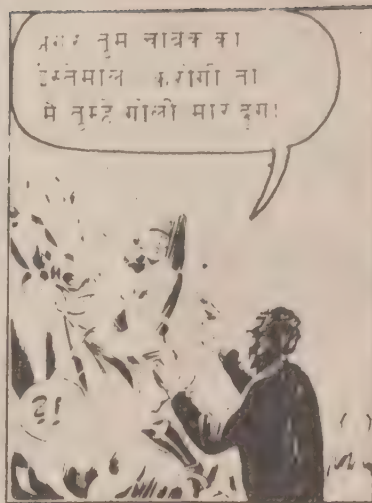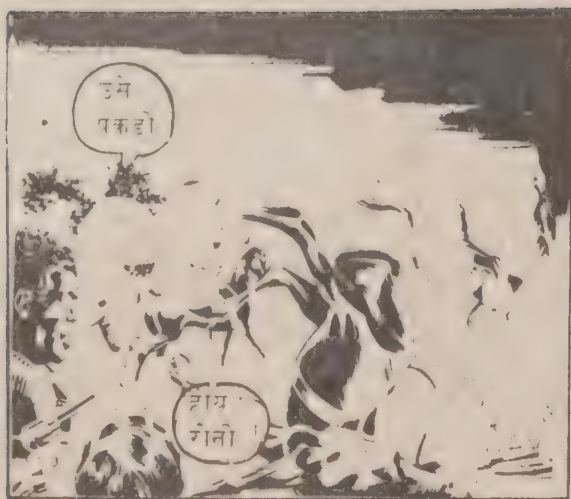
प्र० : शार्टहैंड लिखावट का आरम्भ किसने और कैसे किया ?

उ० : प्रायः सभी के लिए जितना तेज बोलते हैं उतना तेज लिख पाना असम्भव सा ही है। परन्तु रिकार्ड रखने के लिए कभी-कभी ये आवश्यक हो जाता है कि किसी-किसी व्यक्ति के बोलने के साथ-साथ सब कुछ ज्यों का त्यों लिखा जाये। उसका एक ढंग शार्टहैंड में लिखना है। शार्टहैंड आसानी से शीघ्रतापूर्वक बनाये जा सकने वाले संकेतों के माध्यम से लिखने की कला है। ये संकेत शब्द न होते हुए भी इसके जानने वाले द्वारा भली भांति पढ़े जा सकते हैं। आजकल शार्टहैंड शब्द इस प्रणाली की व्याख्या करता है। लेकिन इस स्टेनोग्राफी जिसका अर्थ है छोटी और पतली लिखाई, ब्रेकीग्राफी जिसका अर्थ है छोटी और कम लम्बी लिखाई तथा टेकीग्राफी जिसका अर्थ तेज लिखाई भी कहते हैं।

आप समझते होंगे शार्टहैंड का विचार कोई आधुनिक विचार ही होगा। परन्तु वास्तव में ये कोई दो हजार वर्ष पुराना है। रोमनकाल में 'सिसिरो'' तथा 'सिनिका' जैसे महान व्यक्ति रोमन सीनेट में महत्वपूर्ण भाषण देते थे, इन भाषणों को लिखने के लिए ६३ बी. सी. में 'टीरो' नामक व्यक्ति ने शार्टहैंड की प्रणाली को ईजाद किया था। उसकी बनायी हुई ये प्रणाली इतनी अच्छी थी कि रोमन स्कूलों में इसे पढ़ाया जाता था। राजाओं द्वारा इसका अध्ययन किया गया तथा सैकड़ों वर्ष तक इसका प्रयोग होता रहा। ये प्रणाली प्राथमिक शब्दों पर आधारित थी जिससे एक प्रकार से लिखाई छोटी हो जाती थी। इस प्रणाली में एक व्यंजन को तीन भिन्न रूपों से झुकाया जाता था। इससे बाद आने वाले स्वर का भान होता था।

आधुनिक शार्टहैंड इंगलैंड में रानी एलिजाबेथ के काल में आरम्भ हुई थी। इसमें एक ऐसी प्रणाली का आरम्भ हुआ जिसमें हर चिन्ह चार भिन्न दशाओं में मोड़ा या झुकाया जाता तथा चिन्ह के तले को बारह भिन्न रूपों में बनाया जाता था। सन् १८३७ में इस्माक पिटमैन नामक व्यक्ति ने एक ऐसी प्रणाली का आरम्भ किया जो ध्वनि पर आधारित थी, ताकि हर शब्द को ध्वनि के अनुसार लिखा जा सके, बजाये इसके की उसे हिज्जों या स्पैलिंग के अनुसार लिखा जाये। इस प्रणाली में २४ व्यंजनों के लिए २६ चिन्ह हैं तथा स्वर के लिए बिन्दू और डैश का प्रयोग किया जाता है। सन् १८८८ में श्री ग्रेग ने शार्टहैंड को एक बेहतर प्रणाली का आरम्भ किया। ये ही आजकल सबसे अधिक प्रयोग में लाई जाती है।

प्र० : हमें अपने भोजन के स्वाद का कैसे पता चलता है ?

उ० : स्वाद शरीर के कुछ भागों पर भिन्न भिन्न तत्वों द्वारा उत्पन्न अणुओं पर पड़े प्रभाव पर निर्भर होता है। यदि ये अणु आसानी से हिलते नहीं तो हमें इनका स्वाद पता नहीं चलता तभी हम घुले हुए से पदार्थों
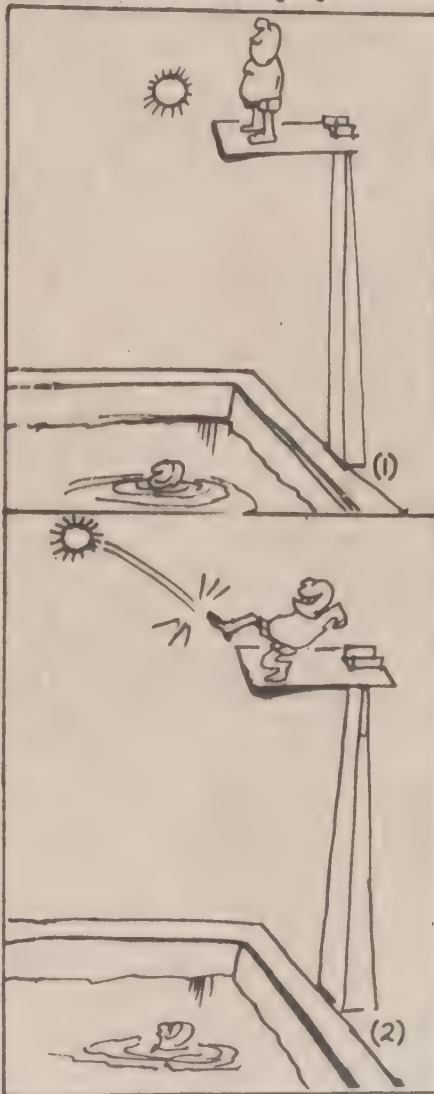
के स्वाद को ही भली प्रकार जान पाते हैं। पानी में रहने वाले जानवरों के सारे शरीर पर ही स्वाद कलिकाएं होती हैं। उदाहरण के लिए मछली अपने पूंछ के मीनपक्षों से भी स्वाद पता लगा लेती है। पृथ्वी पर रहने वाले जानवरों की स्वाद कलिकाएं अधिकतर मुंह के भीतर ही होती हैं तथा मनुष्य में ये कलिकाएं केवल जीभ पर ही पाई जाती हैं।

यदि शीशे में आप अपनी जीभ का निरीक्षण करें तो देखेंगे कि पैपीले कहलाने वाले मस्से जैसी चीजों से जीभ की सतह बनी हुई है। जानवरों में स्वाद कलिकाओं की मात्रा उस विशेष जाति की आवश्यकता पर निर्भर होती है, उदाहरण के लिए व्हेल मछली, मछलियों के झुंड के झुंड बिना चबाये निगल जाती है इसीलिए इसके मुंह में बहुत कम या न के बराबर स्वादकलिका होती है। सूअर के ५,५०० स्वाद कलिकाएं होती हैं, गाय के ३५,००० तथा हिरन के ५०,००० तक स्वाद कलिकाएं होती हैं, इनकी तुलना में मनुष्य को कुछ अच्छा स्वाद बताने वाला नहीं कहा जा सकता, क्योंकि मनुष्य के मुंह में केवल ३,००० स्वादकलिकायें पाई जाती हैं।

मनुष्य की जिव्हा पर स्थित ये स्वादकलिका अलग-अलग खंडों में बंटी रहती हैं तथा हर खंड भिन्न स्वाद का पता लगता है। जीभ के पिछले भाग पर कड़वा स्वाद अधिक महसूस होता है, जीभ के किनारों से नमकीन व खट्टे स्वाद का पता लगता है और मिठास का स्वाद जीभ की नोक से ही सबसे अधिक पता लगता है। जीभ के बीच के भाग में एक ऐसा खंड भी होता है जिस पर स्वादकलिका होती ही नहीं और यहां किसी स्वाद का भी पता नहीं चलता। खुशबू, स्वाद पता लगाने के कार्य में एक महत्वपूर्ण सहायता देती है। लगभग आधी वस्तुओं में हम जिसे स्वाद कहते हैं वो स्वाद न होकर केवल खुशबू ही होती है। उदाहरण के लिए काफी, चाय, शराब, सेब, सन्तरे या नींबू का स्वाद इनकी सुगन्ध से सम्बन्धित होता है। काफी चखते समय सबसे पहले हम उसकी गंध अनुभव करते हैं। फिर गरमाहट तथा फिर भुने बीजों से उत्पन्न हुई कड़वाहट को महसूस करते हैं और अन्त में उसमें मिली चीनी का मिठास हमें पता लगती है। परन्तु काफी के स्वाद का पता हमें तब तक नहीं लगता जब तक नाक तथा गले से भेजे संदेश मस्तिष्क को न पहुंचे। इसको प्रमाणित करने के लिए अपनी नाक को कपड़े सुखाने वाली किसी क्लिप से भींचकर काफी पियें तो आप देखेंगे कि काफी के स्वाद का तो पता बिलकुल भी न लगा। इसी प्रकार और भी बहुत सी चीजों के स्वाद का अन्तर नाक बन्द होने पर हमें पता नहीं चल पाता।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

यह वर्ष तो क्रिकेट का वर्ष ही रहेगा । इंगलैंड की सीरीज खत्म होते ही आस्ट्रेलिया की टीम छः टैस्ट मैच खेलने आ गई । इसके जाते ही पाकिस्तान की टीम छः टैस्ट मैच खेलने आयेगी । थमारे ऊपर बहुत भारी जिम्मेदारी आ गयी है । इतने टैस्ट मैचों की कमान्ट्री सुनना कोई हंसी मजाक नहीं हैं । हमको पूरे जोर शोर से तैयारी करनी है ।
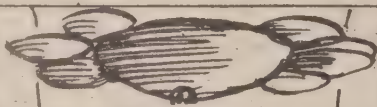
थम समझे थे कि क्रिकेट कमांट्री सुनना आसान काम है । अब देख लिया इसमें कितने पचड़े हैं ? थम जो कमांट्री सुनते हो वह नकली है ।

केवल कानों की सफाई ही काफी नहीं है। आँखों की सफाई की भी सख्त जरूरत है। क्योंकि कम से कम दो टैस्ट मैच तो दिल्ली में ही होंगे जो टी० वी० पर आयेंगे। टी० वी० पर साठ घंटे क्रिकेट देखना है। पहले आँखों में नीबू का पानी डालना पड़ेगा उससे खूब पानी निकलेगा और रोज एक किलो प्याज काटना पड़ेगा उससे भी पानी आयेगा और आँखें साफ हो जायेंगी। फिर उल्लू की खोपड़ी लेकर उसमें देसी घी और कपूर डाल कर काजल तैयार करना पड़ेगा काजल से आँखों में खूब पालिश हो जायेगी।

आँखों की सफाई के बाद मिलबिल की आँखें अंधेरे में बिल्ली की आँखों की तरह चमकेंगी। टी० वी० पर टैस्ट मैच तो क्या टी० वी० के पुर्जे तक दिखाई देंगे। अपने खिलाड़ियों ने सुबह जो नाश्ता किया होगा वह तक पेट के अन्दर दिखाई देगा। खिलाड़ी जख्मी हो जाये तो इसे पता लग जायेगा कि कौन सी हड्डी टूट गयी है।
MEEHOWZZAT

बात यहीं खत्म नहीं होती। योगा का क्रैश प्रोग्राम अमल में लाना पड़ेगा। कम-से-कम पद्मासन में तो महारत हासिल करनी ही पड़ेगी। साठ घंटे बिना हिले डुले टी० वी० स्क्रीन पर आँखें गढ़ाये बैठे रहना योगी जोगी का ही काम है। शकुन्तला दुष्यन्त की राह देखते जैसे आंखें बिछाये रहती थी वही बात हमें पैदा करनी होगी। थम दोनों शकुन्तला हो और टी० वी० दुष्यन्त होगा।
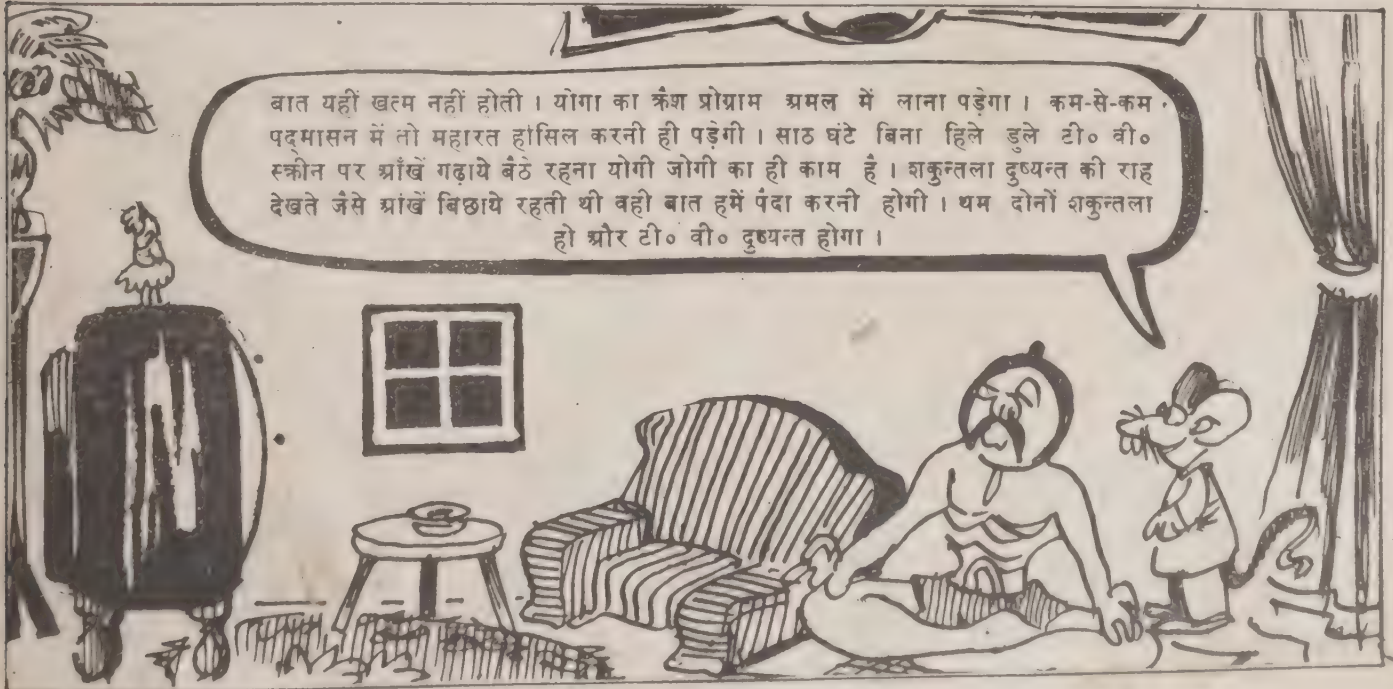
हाथ में करामाती अंगूठी पहन कर ही कमांट्री सुनने के लिये ट्रांजिस्टर ऑन करना होगा। जो चाहोगे वही मिलेगा और हम चाहेंगे कि पाकिस्तान की टीम के दसों खिलाड़ी शून्य पर आऊट हो जायें।
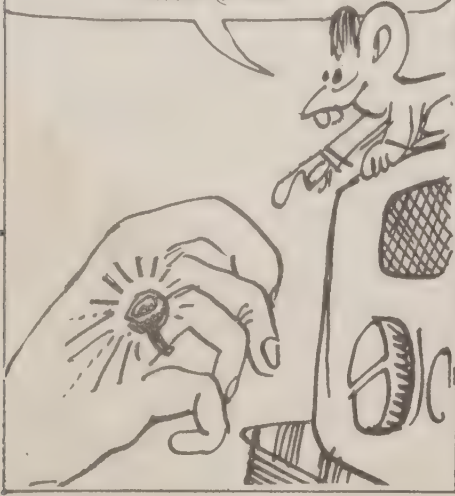
रोज हनुमान जी के मन्दिर जाकर हम दर्शन करके आयेंगे। मन्दिर में मिला प्रसाद हम ट्रांजिस्टर के एरियल पर रख देंगे।

शहनाई शुभ घड़ी का प्रतीक है। सुबह छः बजे उठ कर ट्रांजिस्टर के सामने शहनाई पर हम मंगल ध्वनि बजायेंगे। कपिल देव के बाल की शादी हमको जहीर अब्बास के विकेट से करनी है।

अभी बात यहीं खत्म नहीं होती। बहुत सा जरूरी काम रह जाता है। एक काम यह भी है। सिलबिल की चोटी को खींच कर लम्बा करना पड़ेगा। हो सकता है आल इण्डिया रेडियो की ट्रांसमिशन खराब हो जाये तो हमको कमांट्री बी. बी. सी. पर सुननी पड़ेगी बी. बी. सी. ३१ और १६ तथा १९ मीटर बेंड शार्ट वेब पर सुनाई देगा। इसकी चोटी और अपनी पूँछ खड़ी करके हम एरियल तान देंगे और रेडियो से जोड़ कर आराम से बी. बी. सुनेंगे। बगैर एरियल के बी. बी. सी. ठीक तरह नहीं सुनाई पड़ता।
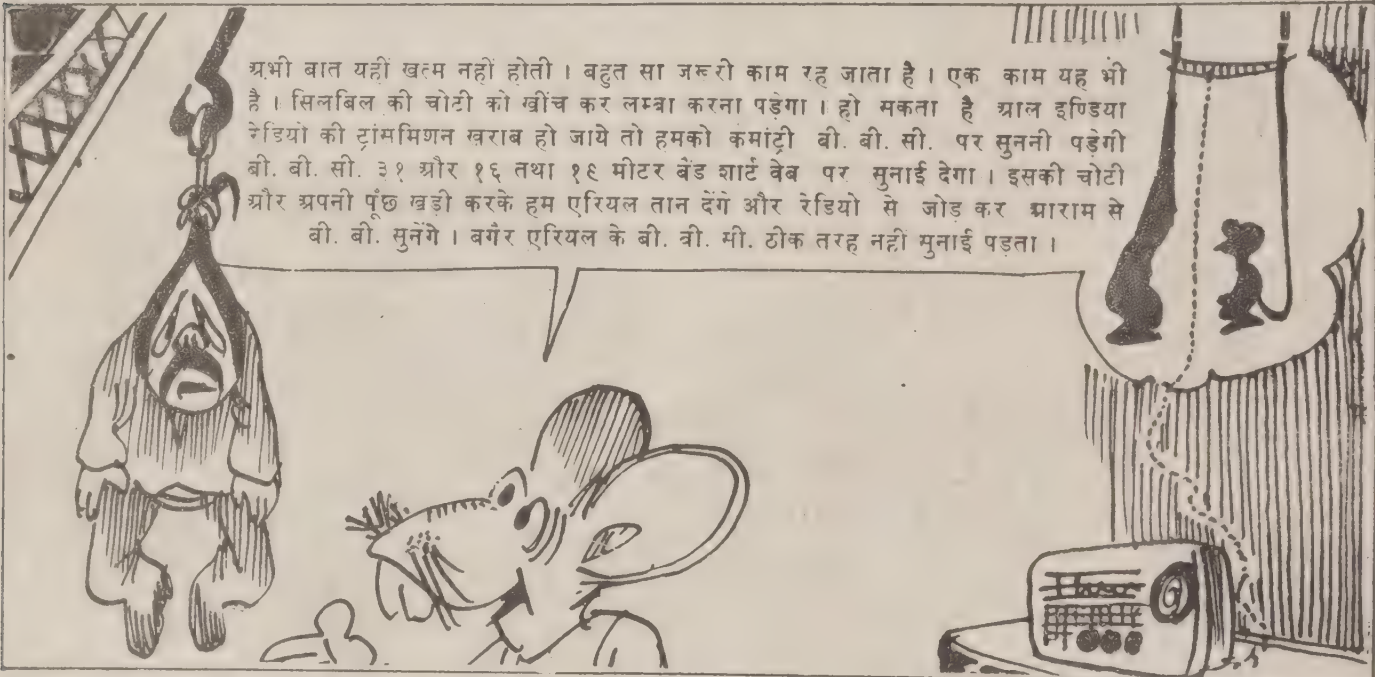
पता नहीं वह दो पपीते के बीज घर बैठे क्या कर रहे होंगे। आज पूरे दिन मैं बाहर रहा। घर की तरफ से फू-फू की आवाज आ रही है। मैं तो जानता था कि वह बूस्टर पम्प चला कर सो जायेंगे और मोटर जल जायेगी। इतनी दूर तक आवाज आ रही है।

इधर देखो आसमान में यह क्या बला है?
आवाज तो इससे आ रही है। यह तो उड़न तश्तरी जैसी लगती है।
फ्लाइंग सॉसर
दैट इज इट !
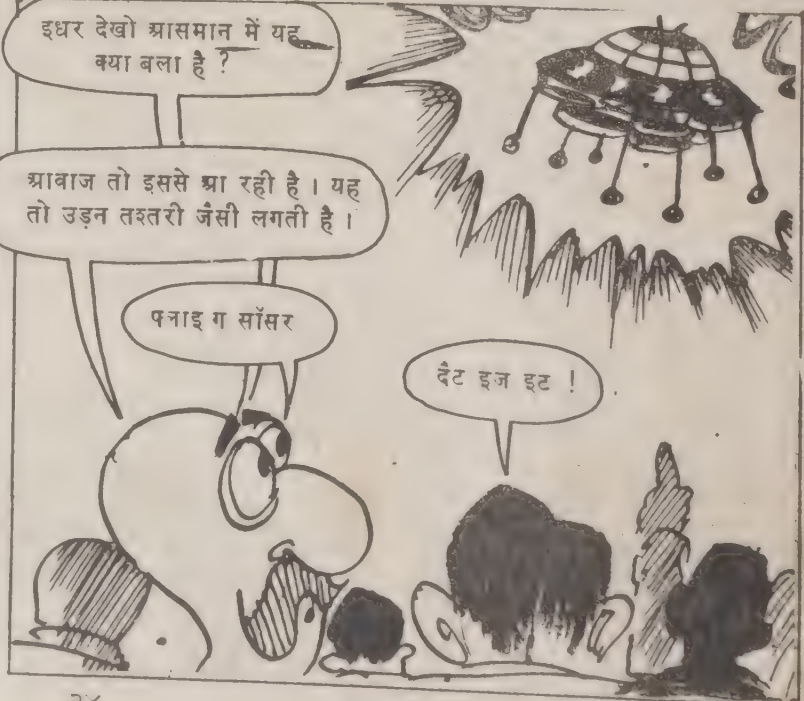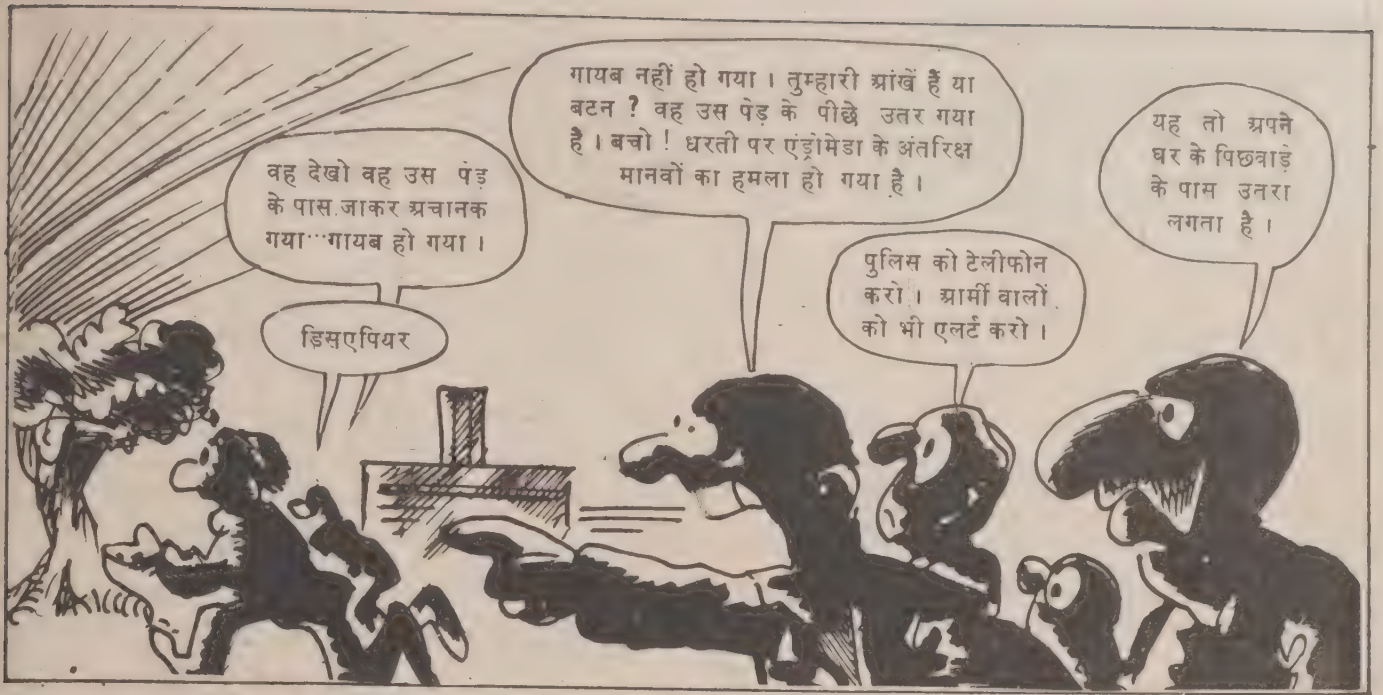
पिलपिल-सिलबिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये ।

काका हाथरसी

आधुनिक योगासन

①

काका हाथरसी लिखित अप्रकाशित पुस्तक 'भोगा एण्ड योगा' का एक अंक

१. चमचासन

विधि—

सबसे पहले सीधे खड़े हो जाइए। मुह पर भोलापन, और आंखों में मक्कारी लाइए। फिर क्रमशः भोलापन को दीनता में बदलिए और मक्कारी को चाटुकारिता में परिवर्तित कीजिए। अब टांगों को सीधा रख कर, धीरे-धीरे झुकते हुए, नासिका को जमीन

पर पहले से रखे हुए जूते पर रगड़िए और जोर-जोर से श्वांस लीजिए। कुहनियां को पेट से सटा कर दोनों हाथ जोड़ कर प्रणाम की मुद्रा बनाइए। जब तक जूते हटा न लिए जायें तब तक सीधे खड़े मत होइए। प्रारम्भ में इस आसन में कठिनाई होती है और स्वाभिमान आड़े आता है, किन्तु एक सप्ताह के अभ्यास द्वारा स्वाभिमान का सत्यानाश हो जाएगा। साधक एक सुयोग्य चमचा बन कर, आशातीत लाभ उठाएगा।

लाभ

नहीं नौकरी मिल रही, बैठे हो बेकार,
चमचासन की कृपा से, हो जाए उद्धार।
हो जाए उद्धार, उदासी दूर भगाओ,
बिना परिश्रम, इन्क्रीमेण्ट-प्रमोशन पाओ।
टिकिट इलेक्शन की चाहो, तो मिल सकती है,
फटी हुई तकदीर तुम्हारी सिल सकती है।
ऊंची कुर्सी मिले, मिनिस्ट्री के आफिस में,
मूरख रिश्तेदार, चिपक जायें सर्विस में।

२. क्लर्कासन

विधि—

यह आसन कुर्सी और मेज की सहायता से होता है। सर्वप्रथम कुर्सी पर तन कर सीधे बैठ जाइए। फिर मस्तिष्क में फाइलों की कल्पना करके, दाहिनी काल्पनिक फाइल को बायें हाथ से उठा कर बाईं ओर रखने जैसी क्रिया कीजिए, पुनः दाहिने हाथ से बाईं फाइल को दाहिनी ओर झटके से फेंकने का उपक्रम कीजिए। फिर एक काल्पनिक सिगरेट दो उंगलियों में दबा कर श्वांस अन्दर खींच कर कुंभक कीजिए, अर्थात काल्पनिक धुंए को अन्दर रोकिए फिर उस धुंआ मिश्रित श्वांस का नासिका रंध्रों द्वारा रेचक कीजिए अर्थात् बाहर निकालिए। पुनः कुंभक उसी प्रकार करके रेचक क्रिया मुंह को गोल बना कर जैसे अंग्रेजी का 'ओ' बोलते समय बनाया जाता है, झटकों से कीजिए, ताकि वायु मंडल में धुंए के छल्ले बनते रहें। अब दोनों हाथों को कुर्सी के दोनों हत्थों पर टिका कर अपने दोनों पैर सिकोड़ते हुए उठाइए और मेज पर लम्बे कर दीजिए। सिगरेट समाप्त होने पर खर्राटे भी भर सकते हैं।

लाभ

घर के दफ्तर को चलो, कर नाश्ता भर पेट,
पलटो इत-उत फाइलें, सुलगाओ सिगरेट।
सुलगाओ सिगरेट, धूल डालो फुर्ती पर,
पांव मेज पर फैला कर, ऊंघो कुर्सी पर।
घर बच्चों के सबब, रह गया रैस्ट अधूरा,
दफ्तर में हो जाय, नींद का कोटा पूरा।
आवश्यक कुछ काम कागजी, छोड़ो ऐसे,
'ओवर टाइम' बने, प्राप्त हों दुगने पैसे।

३. जेलासन

विधि—

दस कदम लम्बाई और पांच कदम चौड़ाई के क्षेत्रफल को एक कोठरी मान कर टहलना प्रारम्भ करिए। आड़े-तिरछे किसी भी दिशा में मुड़ कर बारम्बार टहलिए ताकि जमीन के उस क्षेत्रफल का एक इंच भाग भी आपके पैरों से खुंदे बिना न रहने पाए। इसके बाद जमीन पर पहले दायें हाथ का तकिया लगा कर लेटिए, मन में एक कल्पित शत्रु गढ़ कर उसे मन ही मन बुरी से बुरी गालियां दीजिए। पुनः करवट बदलकर बायें हाथ का तकिया लगाइए और वही मानसिक क्रिया दोहराइए। इसके तत्काल बाद खड़े होकर अपने सामने सींखचों की कल्पना कीजिए और दो सींखचों को कस कर पकड़ कर उन्हें तोड़ने का उपक्रम कीजिए। इस क्रिया के दौरान भुजाओं की मांसपेशियों में तनाव की अनुभूति करना एवं जोर-जोर से श्वांस-प्रश्वास की क्रिया आवश्यक है।

लाभ

गांधी, नेहरू, शास्त्री, भुगत चुके हैं जेल,
उच्चकोटि नेता बने, कष्ट अनेकों झेल।
कष्ट अनेकों झेल, भाग्य तुम भी अजमाओ,
कुछ दिन को ही सही, जेल-दर्शन कर आओ।
बाबू जी, चौधरी, जेल के धक्के खाए,
धन्य हो गए दोनों, उप-मंत्री पद पाए।
प्राप्त होय सुख शांति, नष्ट होंगे सब रोगा,
इस आसन से तुम्हें, जेल में कष्ट न होगा।

क्रमशः...

दीवाने कार्ड को मोड़कर देखिये
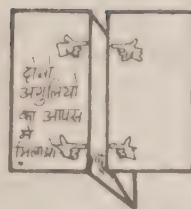
दोनों अंगुलियों को आपस में मिलाइये

आज नेताओं में कुर्सियों के लिये छीना झपटी हो रही है। लोग धर्म तथा छोड़ कर दल-बदल रहे हैं। जोड़ तोड़ के लिये सब अपना धर्म व ईमान बेचने को तैयार हो गये हैं। राजनीतिक पार्टियां और उम्मीदवारों के लेन देन बन गई हैं। किसी को जनता की बात सुनने की फुर्सत नहीं है। नागरिक चुपचाप तमाशा देख रहा है। कब तक यह चलेगा? लोगों के सामने कौन सा रास्ता है? कैसे इस गन्दी राजनीति से छुटकारा मिलेगा? मध्यावधि चुनाव? राष्ट्रपति शासन? फौजी राज? कौन-सा तरीका जनता हाथ में ले [illegible] सही रास्ते पर आने के लिये? पृष्ठ मोड़ कर देखें—

हा हा हा

● एक स्त्री ने कहीं पढ़ा कि पेड़-पौधों से बातें करने पर वह खूब फलते हैं। उस स्त्री ने अपने गुलाब के पौधे से घंटों बातें करनी शुरू की। एक दिन स्त्री के पति ने गुलाब से पूछा, "तुम मेरी बीबी की चिक-चिक से तंग नहीं होते?"
गुलाब बोला, "सुनता कौन है?"

● बचपन और जवानी के बीच संघर्ष का सबसे बढ़िया प्रतीक क्या है?

उत्तर—मूंछों पर चिउंइगम का चिपक जाना।

● रोगी दांत निकलवाने गया। डाक्टर जम्बूर मुंह में डाल ही रहा था कि रोगी के सारे बाल खड़े हो गये! डाक्टर ने पूछा, "डर लग रहा है?"

रोगी बोला, "नहीं तो! मेरे बाल तो शहीद होते जा रहे दांत को आखिरी सलाम देने के लिए खड़े हो गये हैं।"

● एक धनी व्यक्ति की मृत्यु हुई। सभी रिश्तेदार वकील के पास यह जानने के लिए इकट्ठे हुए कि उन्हें वसीयत में कितना पैसा मिला है। वकील ने रिश्तेदारों को बताया कि सारे पैसों का ट्रैवलर्स चेक बनाकर साथ ले गये।

● कालिज में पढ़ने वाले छात्र ने बाप को पत्र लिखा, "बहुत दिनों से आपकी कुशलता का पत्र नहीं आया। शीघ्र ही सौ रुपये भेजें ताकि मुझे पता लगे कि आप ठीक-ठाक है।"

सतीन्द्र जैन 'सुदर्शी'—जबेरा
प्र० : गरीब चन्द जी, क्या आपका जन्म-दिन ३१ अप्रैल है ?
उ० : यही तो अब तक पता नहीं लगा। मेरे मां बाप के पास एक ही कैलेंडर था उसे मेरा बड़ा भाई कुतर कर पहले ही बुरादा बना चुका था।

तरसेम राही 'टिक्'—मोगा
प्र० : गरीब चन्द जी, आप कब से गरीब चंद जी हैं ?
उ० : जब गरीबी हटाओ का नारा पैदा हुआ था तब का गरीब चन्द हूं।

विवेक शुक्ला—लखनऊ
प्र० : गरीब चन्द जी, क्या आपने कभी किसी मंत्री के घर में जलपान किया है ?
उ० : जलपान क्यों, हम तो हमेशा पक्का माल खाते हैं। चाहे वह संतरी का घर हो या मंत्री का, मुझे अपनी पूंछ बराबर भी फर्क नहीं पड़ा।

तिलकराज अरोरा—खुरजा
प्र० : डियर गरीब चन्द जी, कृपया ये बताएं कि मुझ में क्या कमी हैं क्योंकि कोई भी लड़की मुझे प्यार नहीं करती यानि लिफ्ट नहीं देती ?
उ० : आपके पास खरबूजा नहीं होगा। खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है। आपके पास कार होती तो आप उसे लिफ्ट देते और लड़कियां आपको, दिल से मिले दिल और लिफ्ट से मिले लिफ्ट।

शिवन लाल खत्री—रायपुर
प्र० : गरीब चन्द जी मनुष्य अपने आपको अकेला कब समझने लगता है।
उ० : जब आदमी अमीर हो जाता है। गरीबी में दुख उसे अकेला नहीं छोड़ते। हर दम घेरे रहते है।

अशोक जौहर 'गगन'—देहरादून
प्र० : गरीब चन्द जी, क्या आपने या आप की बिरादरी वालों ने मोरारजी टानिक का भी सेवन किया है या नहीं ?
उ० : हम सबने किया है। भारत के बड़े-बड़े शहरों के पीने के पानी की जाँच के बाद पता लगा है कि उसमें मोरारजी टॉनिक की मात्रा मौजूद है। अपने प्रश्न का उत्तर पढ़ते ही पी जाइये एक गलास पानी संजीवनी समझ कर।

रोशन लाल—भिवानी
प्र० : अगर कोई सुन्दर लड़की भीख माँगे तो क्या करना चाहिये ?
उ० : अपने सारे कपड़े उतार कर उसे दे देने चाहियें।

सुरेश कुमार बुधवानी—रायपुर
प्र० : गरीब चन्द जी, इंसान को उसकी गलती का कब एहसास होता है।
उ० : जब गलती की कीमत चुकानी पड़ती है।

चन्द्र कुमार जेठवानी—रीवा
प्र० : गरीब चन्द जी आप कितने इंच लम्बे है और कितने इंच चौड़े ?
उ० : मेरी लम्बाई, चौड़ाई हालात के अनुसार बदलती रहती है। पलंग नजर आए तो लम्बा पड़ जाता हूं और कुर्सी नजर आये तो चौड़ा होकर बैठ जाता हूँ।

विजय कुमार—नई दिल्ली
प्र० : मैं आपका सैक्रेटरी बनना चाहता हूँ आप मुझे कितनी तनख्वाह पर रखेंगे ?
उ० : मैं सैक्रेट्री केवल लड़कियों को ही रखता हूँ। मुझे मूंछों वाले जीव अपने सिवा और पसन्द नहीं आते। यही तो गोलमाल है।

अतिउल्ला खान—सेमरी
प्र० : श्री गरीब चन्द जी, मैं अपने गांव की एक लड़की का फोटो खींचना चाहता हूँ लेकिन वह खिंचते समय भाग जाती है। मेरा पैसा बरबाद हो गया लेकिन अभी तक एक भी फोटो नहीं खिंच पाई है। बताएं मैं क्या करूँ ?
उ० : आप गलत चीज का इस्तेमाल कर रहे हैं। लड़कियों की फोटो कैमरे से नहीं खींची जाती। आँखों के लैंस से तस्वीर दिल में उतारिये। इसमें फोटो डेवेलप करने का खर्चा भी नहीं आता।

सुनील कुमार पसारी—आसनसोल : मैं घर से निकलता हूं तो एक लड़की मुझे गौर से देखती है। इसका क्या कारण हो सकता है ?
उ० : इतनी सी बात के लिये पोस्टकार्ड पर १५ पैसे खर्च कर दिये। शीशे में शक्ल देख लेते तो एक पैसा भी नहीं लगता।

अनूप कुमार बिन्दल—कापोरी कालोनी : गरीब चन्द जी आप में और मोरार जी देसाई में क्या फर्क है ?
उ० : मोरार जी मैदान छोड़कर भाग गये लेकिन मैं अब तक आपके अविश्वास प्रस्तावों का मुक़ाबला कर रहा हूं।

सुरेन्द्र सिंह—कोटद्वार (गढ़वाल) : दोस्त गरीब चन्द जी, मैंने अपनी प्रेमिका को कहा कि इससे बच कर रहना क्योंकि वह लड़का पहले भी कई को फंसा चुका था, मगर मेरी प्रेमिका ने इस पर ध्यान नहीं दिया और उससे प्यार करने लगी। अब आप ही मेरी प्रेमिका को जाकर समझाइये जिससे वो फिर मेरे से प्यार करने लगे।
उ० : लगता है आपकी प्रेमिका भी दल-बदलू है। आप उसे प्रधानमन्त्री बनाने का लालच दीजिये वह दलबदल कर आपके पास आ जायेगी।

सुरेश कुमार बुधवानी—रायपुर (म० प्र०) : दुख को भुलाने के लिए क्या करना चाहिए ?
उ० : मोरार जी के चले जाने के बाद अब तो कोई समस्या नहीं रही।

प्रसन्न कुमार मेहता—पाली (राजस्थान) : क्या आप सिलबिल-पिलपिल के अंगरक्षक हैं या वे आपके ?
उ० : हम सब चोरी-चोरी एक दूसरे की जड़ें काटते हैं।

कश्मीर सिंह—नैनीताल : गरीब चंद जी मुझे जिन्दगी के हर मोड़ से ठोकर ही लगती है और बेसहारा हो चुका हूं तथा अपने आपको बदनसीब समझने लग गया हूं ?
उ० : आप पिछले जन्म में फुटबाल रहे होंगे।

हरीश कुमार अरोड़ा—जयपुर : ग़रीबचंद जी, आप हम सब पाठकों की डाक को अपनी पूंछ में फंसा कर क्यों रहते हैं, क्या आप हमसे दिखावटी प्रेम तो नहीं करते ? कि खाने के दांत दूसरे और दिखाने के दूसरे ?
उ० : मेरी पूंछ कोई घटिया चीज नहीं है। महाराणा प्रताप को अपनी मूंछों पर जितना नाज था मुझे उतना ही नाज अपनी पूंछ पर है।

सैयद अब्दुल जब्बार—बीकानेर : गरीबचंद तेरा कद इतना छोटा क्यों है ?
उ० : मेरा कद लम्बा नहीं है तो क्या हुआ। गप्पें तो लम्बी चौड़ी हांक सकता हूं।

राकेश कुमार—दिल्ली : जरूरत ईजाद की मां होती है। बाप क्यों नहीं ?
उ० : बाप कोई और है। बाप मजबूरी है। और मजबूरी का नाम इन्दिरा गांधी है।

गरीब चन्द की डाक
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

कैकटस क्यों लगायें?

कैकटस पर आप रुमाल या जुराबें सुखाने के लिए डाल सकते हैं। कांटों के कारण उनके हवा से उड़ने का कोई डर नहीं रहता।

आप वे खटके कहीं चले जाइये। सात-आठ दिन बाद आइये कैकटस मजे से खड़ा मिलेगा। दूसरे सारे पौधे मुरझा चुके होंगे!

चोर डाकू घुस जाये तो उससे हथियार का काम लिया जा सकता है। कैकटस कांटों से दर्दनाक चोट कर सकता है।

कैकटस के पास से आप गुजरें तो वह साड़ी का पल्ला कांटों से पकड़ लेगा। आपको शादी के बाद के दिनों की सुमधुर याद आयेगी।

कैकटस के बारे में अधिकतर लोगों को कुछ पता नहीं होता। आप कैकटस का जिक्र करके अपनी सहेलियों पर रौब जमा सकती हैं। वह मुंह ताकती रह जायेंगी।

कैकटस को देख कर आप अपने जूड़े के लिए नये-नये डिजायनों की कल्पना कर सकती हैं।

(पृष्ठ ७ से आगे)

इससे पहले कि वह दोनों ढाटे वाले संभलते, दूसरे खाली घोड़े की पीठ पर भी एक मोटा पत्थर बड़ी जोर से पड़ा…वह घोड़ा भी बिलबिलाकर खड़ा हुआ। दोनों ढाटा पोश बौखलाकर खड़े हो गये…उन्होंने अभी तक मुन्नी को पकड़ रखा था और मुन्नी चीखती जा रही थी। दोनों बौखला रहे थे कि यह हो क्या गया है। अचानक एक पत्थर सनसनाता हुआ आया और पहले ढाटा पहने आदमी की आंख पर पड़ा…उसके गले से डकराती हुई एक चीख निकली…साथ ही दूसरे आदमी के माथे पर तड़ाक से एक पत्थर लगा और उसके माथे पर एक छोटी गेंद जितना गूमड़ उभर आया। उसकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया और उसके हाथ से मुन्नी का हाथ छूट गया। मुन्नी चीखती हुई उस पेड़ की ओर भागी जिस पर चढ़कर अविनाश गुलेल से पत्थर फेंक रहा था।

उधर मुन्नी की चीखें सुनकर खेतों में काम करते हुए कुछ लोग और भेड़-बकरियां चराते हुए गवाले भागकर आ गए थे…वह चिल्ला रहे थे—

'अरे…कौन है ?'

'यह तो ठाकुरजी की लड़की मुन्नी है।'

'अरे…यह डाकू हैं।'

'मारो…मारो…।'

'पकड़ो…पकड़ो…।'

उधर अविनाश की गुलेल से निकले हुए पत्थर उन लोगों को निरन्तर लहू-लुहान किए जा रहे थे 'फिर वह अचानक बेहाल होकर भाग खड़े हुए। गांव वाले लाठियां उठाए हुए उनके पीछे भागे।

मुन्नी पेड़ के तने से लिपटी थर-थर कांप रही थी। अविनाश गुलेल को मुंह में दबाकर फुर्ती से बन्दरों की तरह नीचे उतर आया। मुन्नी अविनाश से लिपटती हुई बोली—

'निशु…निशु…।'

'मुन्नी…मुन्नी…।'

दोनों भरभाकर रो उठे। इतनी देर में गांव वाले वहां आ पहुंचे। ठाकुर धर्मपालसिंह भी उनमें थे। मुन्नी को देखकर वह जोर से चिल्लाए—

'मुन्नी…मेरी बच्ची…।'

'बापू…बापू…।' मुन्नी दौड़कर ठाकुर साहब से लिपट गई।

ठाकुर साहब का चेहरा किसी भूचाल की लपेट में आ गया लगता था। उसकी आंखों में गहरी चिन्ता व्यक्त हो रही थी…और गांव वाले बातें कर रहे थे—

'भगवान ने बचा लिया।'

'वरना वह लोग आज मुन्नी बिटिया को भी ले जाते।'

'फिर भगवान जाने क्या होता ?'

'कमाल तो निशु का है जिसने गुलेल से मार-मारकर डाकुओं को भगा दिया।'

ठाकुर धर्मपालसिंह ने आंसू भरी आंखों से अविनाश को देखा और आगे बढ़कर उसके सिर पर हाथ फेरने लगे।

रामदेई और यशपाल शोर सुनकर घबराकर हवेली में से निकल आए थे…लेकिन अभी वह ड्योढ़ी ही में थे कि अचानक धर्मपाल मुन्नी का हाथ पकड़कर ड्योढ़ी में आए। मुन्नी रामदेई को देखकर रोती हुई चिल्लाई—

'मां…मां…।'

फिर वह रामदेई से लिपट गई। रामदेई जल्दी-जल्दी उसे थपकते हुए आश्चर्य से बोली—

'क्या हुआ ? मेरी बच्ची को क्या हुआ ?'

'यह पूछ कि क्या नहीं हुआ ?' ठाकुर धर्मपालसिंह ने कहा, 'आज भगवान ने ही कृपा कर दी जो इस घराने की इज्जत आबरू लुटने से बच गई।'

'क…क…क्या कह रहे हैं आप ?' रामदेई ने कांप कर पूछा।

'आखिर क्या हुआ था ?' यशपाल ने पूछा।

'डाकू उठाकर ले जा रहे थे मुन्नी को।'

'हाय राम !!' रामदेई की चीखें निकल गईं।

यशपाल की आंखें भी आश्चर्य से फटी रह गई थीं और मुन्नी विलख-विलख कर रो रही थी। धर्मपाल कह रहे थे—

'भगवान न करे…वह लोग अपने उद्देश्य में सफल हो जाते तो जानती हो क्या होता ? कम से कम मैं तो अपने आपको बन्दूक मारकर मर गया होता।'

'नाथ…!' रामदेई कांप गई।

'इस ठाकुर परिवार की इज्जत मिट्टी में मिल जाती, हम किसी को मुंह दिखाने के योग्य न रहते…।'

'बस कीजिए नाथ…भगवान के लिए बस कीजिए।'

'मैं कल सवेरे ही दुर्जन नगर जाता हूं और इसी हफ्ता का मुहूर्त निकलवाकर मैं इसे ससुराल वालों के सुपुर्द किए देता हूं।'

अविनाश अपने घर के दरवाजे में दाखिल हुआ तो उसे ऐसा लगा जैसे उसके माथे पर कोई चीज आकर लगी हो। अविनाश का पूरा शरीर हिल कर रह गया। सामने मास्टरजी गुस्से में भरे बैठे थे…अविनाश की मां दुलारी बैठी खांस रही थी और उसकी सांस तेज-तेज चल रही थी।

अविनाश को देखते ही मास्टर जी ने डंडा उसकी ओर उठाया और गुर्राकर बोले—

'वह आ गया तुम्हारा लाडला…जरा पूछो इसके करतूत इसी की जबान से। कमबख्त ने पूरी कक्षा को सिर पर उठा रखा है। स्कूल तो स्कूल गांव का बच्चा-बच्चा इसकी शरारतों से तंग है कक्षा में हाजिरी लगवा कर गायब हो जाता है। मास्टर पिता समान होता है, इस कमबख्त को इसकी भी परवाह नहीं…आज मेरी टोपी में मेंढक लाकर रख दिया था…सारे बच्चों में मेरी हंसी [illegible] …कल मेरी टोपी में गोबर भी लाकर [illegible] सकता है…ऐसे नालायकों का क्या भ[illegible] साफ-[illegible] ला दुलारी बहन…अब मैं इस [illegible] पढ़ने [illegible] मास्टर [illegible]

यह कहकर मास्टरजी गुस्से में उठे और छड़ी को टेकते हुए तेज-तेज घर से निकल गए। अविनाश ने चुपचाप दुलारी की ओर देखा और उसकी आंखें झुक गईं। अविनाश दुनिया के किसी आदमी से नहीं डरता था ···अगर डरता था तो केवल दुलारी से। इस लिए नहीं कि दुलारी उसे मारती थी या कोई सजा देती थी बल्कि इसलिए कि दुलारी बहुत कमजोर थी···बीमार थी और उसे जब गुस्सा आता तो वह कई दिन के लिए खाट से लग जाती थी···

दुलारी होंठ भीचे उसे घूरती रही··· फिर उसने कांपते हाथों से झाड़ू उठाई और बड़ी मुश्किल से घुटनों पर हाथ टेककर उठी तो अविनाश कांप गया···वह जल्दी से दुलारी के पास आ गया और दुलारी के होंठों से कंपकंपाती आवाज निकली—

'मूर्ख···नीच···हरामखोर···!'

और फिर दुलारी ने अविनाश के बदन पर झाड़ू बरसाना शुरू कर दी। अविनाश ने एक बार भी अपने आपको नहीं बचाया और न अपनी जगह से हिला। दस-बारह झाड़ू मारने के बाद ही दुलारी बुरी तरह हांफती हुई गिरने लगी। अविनाश ने जल्दी से बढ़कर उसे संभाल लिया।

'मां···बस कर मां···तू थक जाएगी।'

'मत कह मुझे मां अपनी गंदी जबान से ···'दुलारी ने अपनी रुआंसी आवाज में कहा।

'मां···मां···' अविनाश ने बड़ी मुश्किल से उसे बिठा दिया।

'अभागे···' दुलारी भर्राई हुई आवाज में बोली, 'क्यों मुझ विधवा पर जुल्म ढाता है? लोगों के सामने मुझे अपमानित कराता है? मैं तो जाने क्या-क्या सपने देखती हूं तेरे लिए। जब तू तीन बरस का था तो तेरे पिता तुझे छोड़कर इस दुनिया से सिधार गए थे, तब से मैं अकेली मां बनकर नहीं बल्कि बाप बनकर भी तो तेरा पालन कर रही हूं।

'जब तू पैदा हुआ था तो तेरे पिता ने तेरे लिए क्या-क्या सपने देखे थे···तुझे पढ़ाएंगे और एक साधारण किसान की बजाए तुझे कोई बड़ा आदमी बनायेंगे। मैं उन्हीं के सपने पूरे करने के लिए यह सबकुछ कर रही हूं···तेरे लिए मैं शहर नहीं गई इस कारण कि जो थोड़ी बहुत खेती तेरे पिता छोड़ गए हैं वह नष्ट न हो जाए···इसी से मैं तुझे कुछ बनाना चाहती हूं···वरना शहर में तेरे मामा मुझे कितना बुलाते हैं कि बहन शहर चली आओ···मैं एक छोटा सा दुकानदार हूं, जो रूखी-सूखी मैं खाता हूं वह तुम और अवि-नाश भी खाया करना···लेकिन मैंने तेरी ही भलाई के लिए गांव की कठिनाइयां झेलना स्वीकार कीं किन्तु शहर नहीं गई···।'

'मां···मां!' अविनाश की आवाज भर्रा गई।

'अभागे···तूने स्कूल से अपना नाम भी कटवा लिया? अब तू यहां क्या पढ़ेगा? मैं···मैं अब यहां एक दिन भी नहीं रहूंगी··· मैं···मैं कल सवेरे ही तुझे लेकर तेरे मामा के पास शहर चली जाऊंगी।'

'मां···मां···।'

बस···मुझसे बात मत कर···।' दुलारी ने हांफते हुए कहा, 'मैं···मैं···मैं···तेरे पिता की सौगंध खाती हूं कि अब मैं तेरे हाथ से उसी दिन पानी पिऊंगी जब तू शहर के उस स्कूल में जिसमें तू पढ़ना आरंभ करेगा, अपनी कक्षा में प्रथम आएगा।'

'मां···मां···।' अविनाश रोता हुआ बोला, 'भगवान के लिए अपनी सौगंध वापस ले लो मां।'

'नहीं—मैं अपनी सौगंध वापस नहीं लूंगी।'

बोलते-बोलते दुलारी का गला सूख गया था···होंठ चटकने लगे थे···आवाज फट गई थी। दुलारी स्वयं ही हांफती-कांपती हुई उठकर लड़खड़ाती पानी के मटके की ओर बढ़ने लगी तो अविनाश ने रोककर कहा—

'ठहर जा मां···तू लेट जा···मैं पानी लाता हूं।'

'नहीं-नहीं···मैं अपनी सौगंध नहीं तोड़ूंगी···मैं तेरे हाथ का पानी नहीं पियूंगी ···मैं तेरे हाथ का पानी बिल्कुल नहीं पियूंगी।

दुलारी ने बड़ी मुश्किल से कंपकंपाते हाथों से पानी निकाला और पीने लगी। अविनाश होंठ भीचे खड़ा रह गया···उसकी आंखों से टपटप आंसुओं की बूंदें टपकने लगीं।

दुलारी के घर का जो थोड़ा बहुत सामान था वह बैलगाड़ी में लाद दिया गया। पास-पड़ोस की औरतें इकट्ठी हो गई थीं। दुलारी ने कांपते हाथों से दरवाजे में ताला लगाया और चाबी एक पड़ोसिन को देकर कम्पित स्वर में कहा—

'लो बहन···अब इस घर की देख-भाल तुम्हारे सुपुर्द है।'

'तुम चिंता मत करो बहन···जब कभी तुम गांव लौटकर आओगी तुम्हें घर ऐसा ही साफ-सुथरा मिलेगा।'

'मुखियाजी···।' दुलारी ने मुखिया को हाथ जोड़कर कहा, 'मैं विधवा हूं···आपने आज तक मेरे पति के खेतों की देखभाल की, उन्हें पट्टे पर उठाया और मुझे कोई कष्ट नहीं होने दिया···अब भी मैं यह सब आप ही को सौंप कर जाती हूं।

'तुम चिन्ता मत करो बहन···जिस प्रकार तुम्हें आज तक अपने खेतों की फसलों की आमदन मिला करती थी वैसे ही अब भी मिला करेगी।'

धन्यवाद मुखियाजी···मैं आपका उप-कार कभी नहीं भूलूंगी।' दुलारी ने खांस कर कहा, 'अगर अनजाने में मुझसे कोई भूल-चूक हो गई हो तो आप सब मुझे क्षमा कर दें।'

सब की आंखें भीग गईं···फिर कुछ पड़ोसियों ने और अविनाश ने मिलकर दुलारी को गाड़ी पर चढ़ाया—मुखिया ने गाड़ीवान से कहा—

'हरिया···जरा जल्दी-जल्दी जमना का पुल पार कर लेना···सुना है पानी बढ़ रहा है।'

अविनाश भी गाड़ी में सवार हो गया और गाड़ी चल पड़ी। दुलारी ने हसरत भरी आंखों से अपने मकान को देखा और जब उसका दरवाजा नजरों से ओझल हो गया तो उसकी आंखें भर आईं और उसके दिल में उथल-पुथल सी होने लगी···वह अपनी सिसकियों को दबाए बैठी रही। अविनाश उस गली को निराशा से देख रहा था जहां से अब गाड़ी गुजर रही थी। उसकी आंखें बेचैनी से मुन्नी को ढूंढ़ रही थीं। यह सोच-सोचकर उसका मन बैठा जा रहा था कि अब न जाने वह इस गांव में कब वापस आएगा? अब कभी वह मुन्नी को देख भी सकेगा या नहीं देख सकेगा?

थोड़ी देर बाद गाड़ी गांव की सीमा से निकल गई और कच्चे रास्ते पर बढ़ने लगी। उसने पलटकर दूर तक देखा लेकिन मुन्नी का कहीं पता नहीं था। अचानक न जाने किस ओर से मुन्नी की तेज चीख सुनाई दी—

'निशु···निशु···।'

क्रमशः

सवाल यह है?

पिछले दिनों राजनीति ने क्या-क्या गुल खिलाये ?
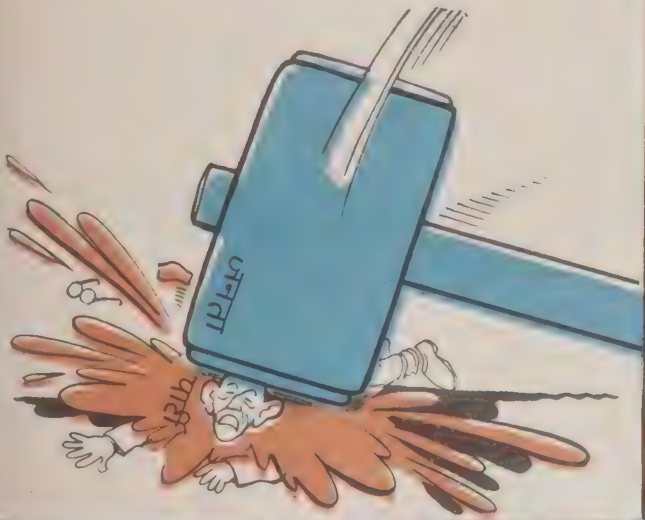
पशु-पक्षियों की नजर में मनुष्य

—डा० राम सिया सिंह

हिमालय की तराई में एक बार भयंकर आग लगी। सारे पशु-पक्षी एक सुरक्षित स्थान पर इकट्ठे हुए। उन्हें इस बात का सख्त अफसोस था कि मनुष्य ने कौतुकवश आग लगाकर उन्हें बेघरबार कर दिया था। मनुष्यों की काली करतूतों के प्रति प्रत्येक के हृदय में उबाल था। अच्छा खासा कुहराम मचा हुआ था।

मृगराज ने कहा—'भाइयों, आप लोग मनुष्य की तरह कोलाहल मत कीजिए। हम पशु हैं। हममें से प्रत्येक को अपनी बात कहने का पूरा अधिकार है। हममें मनुष्य की तरह कोई एक दूसरे का गुलाम नहीं है जो अपनी बात कहने से डरे। आप सब अपनी-अपनी बात एक-एक करके खुलकर कहिये।'

मृगराज की बातों से शान्ति छा गई। सबसे पहले श्वानराज ने दुम हिलाते हुए अपनी बात कही—'सरकार, गुस्ताखी माफ हो, मनुष्य मुझे गुलाम बनाकर चन्द रोटी के टुकड़े देकर पालता है—मुझे इसका गम नहीं है जितना इस बात का कि उसने मेरे सभी अधिकार मुझसे छीन लिए हैं। वह एक दूसरे पर गुर्राता है, एक दूसरे के सामने दुम हिलाता है। एक के मुँह की रोटी को दूसरा खींच ले जाता है।'

इस पर कागराज बोल पड़े—'तो इससे तुम्हारा नुकसान ही क्या है? आखिर मनुष्य बन्दरों की औलाद तो है।'

मर्कटराज को यह बात पसन्द न आई। वे बीच में ही बोल पड़े 'ठीक है, मनुष्य मुझे अपना पूर्वज मानता है मगर मुझमें मनुष्य की तरह दुर्गुण नहीं हैं। मैं मनुष्य की तरह लम्पट-लोलुप नहीं हूं। ठीक है मेरी जाति कभी-कभी आपस में लड़ने लगती है, मगर शत्रु के साथ हम सब एक होकर लड़ते हैं। हम किसी का अहित जानबूझकर नहीं करते, हममें से बहुतों का चेहरा काला है मगर दिल काला नहीं है। मनुष्य का तो दिल काला है। बाहर वह सफेद मुखौटा लगाये रहता है। उसने हमारी जाति के दीन-दुर्बलों को पकड़-पकड़ कर नचाना भी शुरू कर दिया है। वह गधे पर बोझ लाद-लाद कर अपना उल्लू सीधा कर रहा है।'

गर्दभराज ने कहा—'सच है, मर्कटराज ने ठीक ही कहा है। वह मेरे नाम का दुरुपयोग बार-बार करता रहता है। मैं शान्त चित्त से उसकी लाठी-डंडों को सहता हुआ भी कार्य करता रहता हूं। रूखी-सूखी घास पर सन्तुष्ट रहता हूं। मगर वह बार-बार मेरा नाम बदनाम करता रहता है। वह अपने ही भाइयों का खून पी जाता है। इसमें उसे लज्जा नहीं आती बल्कि वह बहादुरी की डींग हाकता है।'

मैना ने गर्दभराज की बातों को काटते हुए कहा—'भाई गर्दभराज, एक दूसरे को मारकर खा जाने वाले हमारे पशु-समाज में भी तो हैं। फिर यह दुर्गुण अगर मनुष्य में भी है तो क्या बुरा हुआ? स्वयं अध्यक्ष महोदय केहरिराज भी मांसाहारी हैं। इस लिए इस आरोप को हमें अपनी सभा की कार्यवाही से निकाल देना चाहिये।'

गीदड़राज ने हामी भरी—'मृगराज ने बिलकुल ठीक कहा है। हम मनुष्य की तरह छली, कपटी और धूर्त नहीं हैं। आजकल बहुत से मनुष्य नेता के नाम पर दूसरे मनुष्यों को चूस रहे हैं।'

खटमल ने सिर हिलाया—'ठीक है, हम पेट भर जाने पर खून चूसना बन्द कर देते हैं, मनुष्य की प्यास तो अपरिमित है।'

जोंकों के नेता ने कहा—'हम भी खून पीकर छोड़ देते हैं, मनुष्य की तरह चिपके नहीं रहते।'

अब तोते की बारी थी—'सरकार, मनुष्य ने मुझे भी गुलाम बना लिया है। वह मुझसे अपनी बोली बुलवाता है। मुझे पिंजरे में बन्द रखता है। स्वतन्त्रता का दम भरने वाला मनुष्य मैना, कबूतर, मुर्गी, मुर्गा, गाय, बैल, भैंसा, ऊंट, हाथी की तरह अब मुझे भी कैद करने लगा है।'

केहरिराज ने अपनी सफाई पेश की—'गर्दभराज ने अप्रत्यक्ष रूप से मुझ पर भी आरोप लगाया है। किन्तु वे भूल जाते हैं कि मैं भूख से पीड़ित होने पर मनुष्य का ही खून पीता हूं, अपनी जाति के ही लोगों का खून नहीं पीता। केवल क्रीड़ावश मैं किसी का खून नहीं बहाता। विशेष परिस्थिति में अत्यधिक भूख सताने पर ही मुझे हिरनें, भैंसा आदि का खून पीना पड़ता है। मगर वन का राजा हूं। इसलिए दो-एक खून माफ भी हो सकते हैं। मनुष्यों के राजा तो बड़ी-बड़ी लड़ाई करवाते हैं और हजारों-लाखों का खून कर देना उनके लिए कोई बड़ी बात नहीं है। उन्होंने ऐसे-ऐसे खतरनाक बम बना लिए हैं कि चन्द मिनटों में ही सारी जाति नष्ट हो जाए मनुष्य को हम वनचरों से डर कर सुरक्षा की कोई विशेष जरूरत नहीं है। मनुष्य तो मनुष्य से ही डरा हुआ है और अरबों रुपये सुरक्षा के नाम पर बर्बाद करता है। एक मनुष्य को सबसे बड़ा खतरा दूसरे मनुष्य से ही है। सजातीय खून के पियक्कड़ हमारे वनचर समाज में कोई नहीं है। हमारे अन्दर कोई असमानता नहीं है।'

सभी चिल्ला पड़े—'सत्य है, सत्य है।'

अन्त में गजराज चिंघाड़ कर बोले—'भाइयों, मनुष्य ने स्वयं ही इतने घातक हथियार बना लिये हैं कि मेरा दृढ़ विश्वास है कि एक दिन वह अपने ही बनाये जाल में मकड़ी की तरह फंस जायेगा। वह पूरी तरह नष्ट हो जाएगा। आग लगाकर उसने आज हमारा घर उजाड़ा है। इसका फल उसे अवश्य चखना पड़ेगा। आप लोग शान्ति के साथ अपने-अपने रहने का बन्दोबस्त कर लीजिए। हम लोग मनुष्य की तरह आलसी और कामचोर नहीं हैं। मनुष्य के दुर्गुणों का तो वारापार नहीं है। वह चोर है, मक्कार है, बेईमान है दगाबाज है, फरेबी है, पाखण्डी है और न जाने क्या-क्या है—यह सही है। मगर हमें दूसरों के दुर्गुण भी तो नहीं अपनाना है। अब तो मेरा प्रस्ताव है कि आज की सभा विसर्जित की जाय।'

'ठीक है, ठीक है'—सभी ने करतलध्वनि से गजराज की बातों का समर्थन किया।

केहरिराज की हुंकार के साथ सभा समाप्त हो गई।

मदहोश
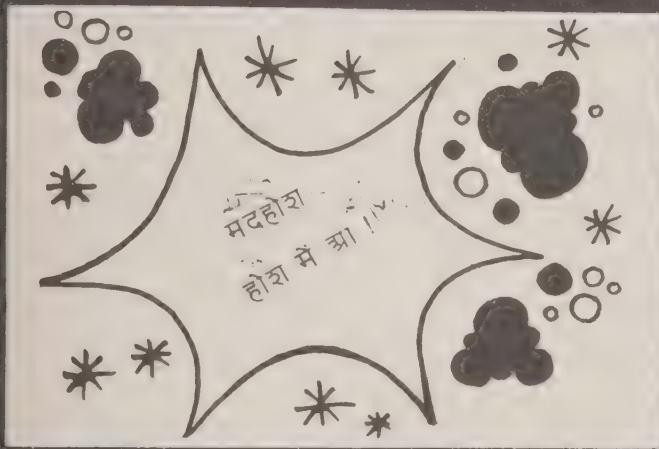
परिणाम

अंक नं० २७ में प्रकाशित प्रतियोगिताओं के परिणाम

सोचिये का सारांश

"बच्चों की खुशी में ही बड़ों की जीत है।"

विजेता—मनीष कुमार सूद,
१०६/१७८ ए गान्धी नगर,
कानपुर—२०८०१२

शीर्षक प्रतियोगिता का परिणाम

हल : क्यों भाई यहां कहीं पानी मिलेगा ?"

विजेता—(१) गजेश दुआ 'सावन'
ए-१/५५ जनकपुरी,
नई दिल्ली-५८
(२) मो० जहाँगीर
फाईव स्टार वाच कं०,
मेन रोड, राँची—८३४००१ (बिहार)

तुक्कम तुक्का का विजेता :

सलीम शहज़ाद
द्वारा—हनीफ मिस्त्री का मकान, किले की ढाल, नागौर (राज०)-३४१००१

कविता

जब अर्थी उठी कांग्रेस की,
तो यह घबरा गये !
गर्जन किया दहाड़ कर
'जनता' में आ गये !!
जीता दिलों को अक्ल से,
फिर गद्दी पा ही ली !
वल्लाह क्या कमाल था,
गुञ्चा खिला गये !!
न था इनके साहब जादे को
बाप का ख्याल !
रातों ही रात कांड कर—
खबरों में आ गए !!
मंजिल बड़ी करीब थी,
ये काँटे बिछा गए !!

पोर्ट्स सिटीजन का परिणाम

विजेता—जे० एस० शर्मा
बी० एस० सी० तृतीय वर्ष सेक्शन—बी
श्याम लाल कालज, शाहदरा
दिल्ली—११००३१

● एक क्रिकेट खिलाड़ी का प्रेम प्रसंग स्थानीय अम्पायर की लड़की से चला। अम्पायर व उनके लड़के शादी के विरुद्ध थे। दोनों प्रेमी चोरी से विवाह करने की ठान पंडित के पास गये। दोनों वेदी के चक्कर लगाने लगे, सातवां फेरा शुरू हुआ ही था कि लड़की के भाई डंडे लेकर आये। दूल्हे को डंडा मार गिरा दिया और अपनी बहन को जबरदस्ती खींच कर ले गये। सातवां फेरा पूरा न होने के कारण शादी में उस प्रेमी क्रिकेटर को रन आऊट माना गया।

आगामी पांच-छः महीने का समय भारत में अपूर्व क्रिकेट का रहेगा। सितम्बर से जनवरी तक भारत में आस्ट्रेलिया व पाकिस्तान से १२ टेस्ट मैच खेले जायेंगे। इस ठसाठस क्रिकेटी मौसम के लिये भारत के क्रिकेट प्रेमियों को स्वयं को तैयार करना है। कमेंट्री श्रोता व टी. वी. दर्शकों को कमर कसनी है।

खिलाड़ियों को तो जो करना है सो करना ही है उनसे ज्यादा तैयारी जनता को करनी है। हम इस फीचर में आप सबको कुछ महत्वपूर्ण हिदायतें दे रहे हैं। जो आप पर फिट आता हो उसे अमल में लायें व साबुत वन पीस क्रिकेट युद्ध से अपना झंडा लहराते हुये जीते जागते निकल आयें।

रोज प्राणायम का योगाभ्यास करें, क्रिकेट कमेंट्री वाले दिन लोग सिगरेट अधिक पीते हैं। आप ड्राइंग रूम में जायेंगी तो प्राणायम द्वरा सांस रोक अपने फेफड़ों को दूषित हवा से बचा पायेंगी।
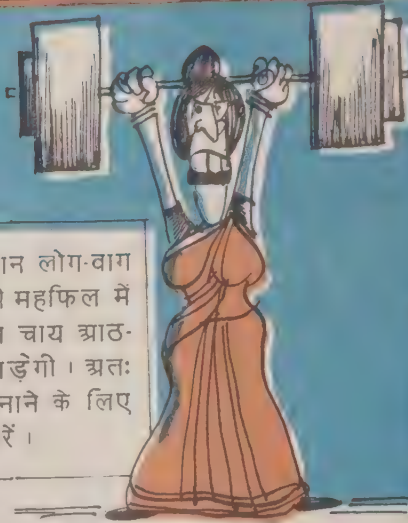
क्रिकेट कमेंट्री के दौरान लोग-बाग चाय खूब पीते हैं। कमेंट्री महफिल में आपको पन्द्रह-सोलह कप चाय आठ-दस बार सप्लाई करनी पड़ेगी। अतः गृहणियां बाजू मजबूत बनाने के लिए वेट लिफ्टिंग करें।

रोज अपने लॉन में कुत्ते की तरह मिट्टी खोदिये, हाथों से। इससे नाखून घिस जायेंगे। मैच रोमांचक दौर में होगा तो चाह कर भी आप नाखून नहीं चबा पायेंगे।

तीन टांग वाली कुर्सी पर बैठने की आदत डालें। ऐसी कुर्सी पर बैठकर ही कमेंट्री सुनें या टी. वी. पर मैच देखें। बार-बार बैलेंस बिगड़ेगा और आप गिर पड़ेंगे फिर उठकर बैठेंगे। इस प्रकार खाना हजम करने लायक कसरत हो जायेगी अन्यथा बैठे-बैठे कमेंट्री सुनने से कब्जी या बवासीर हो सकता है।

मिलीटरी के कबाड़ी बाजार से भारी और बहुत भारी जूते खरीद कर उन्हें पहनने की आदत डालिये। उन्हें पहन कमेंट्री सुनिए। अच्छी खबर आने पर आप उछल पड़ेंगे तो ज्यादा नहीं उछल पायेंगे और आपका सिर छत से टकरा कर फटने का खतरा नहीं रहेगा।

आर्मी वालों की तरह दीवार फांदने की प्रेक्टिस करें। आपको ही तो जंगला फाद कर खेल के दौरान मैदान में दौड़ कर खेल में बाधा डालनी है।

आपके घर टी. वी. है तो टी. वी पर मैच देखने वालों की फौज आपके ड्राइंग रुम पर धावा बोलेगी। आप सारा कीमती फर्नीचर ड्राइंग रूम से हटवा दीजिए, उसकी जगह सारी टाट या दरी बिछा दें वर्ना आपका भी फर्नीचर कबाड़ी का माल बन जाएगा।
जिमनासियम में हार्स जम्प की प्रेक्टिस करें। यह फन उस वक्त काम आयेगा जब आप टिकट लेने जायेंगे, लोगों के सिर व कंधों पर से होकर खिड़की तक पहुंचने की कोशिश करेंगे।
वर्षा मांगने वाले फिल्मी गीतों के रिकार्ड (जैसे काले मेघा पानी दे) लाकर शेक और ट्विस्ट की गति पर नाचने की प्रेक्टिस करें। हमारी टीम हारने वाली हो तो आप इसी प्रकार ऊपर वाले से वर्षा करके मैच बचाने के लिये प्रार्थना कर सकते हैं।
आप लड़की हैं तो एक टांग पर शरीर बैलेंस कर बायां हाथ आगे की ओर अधिक से अधिक ले जाने का अभ्यास करें। इसी प्रकार तो आपको इमरान खां का आटोग्राफ लेना है।
कई लोग, जब मैच सस्पेंस की स्थिति में होता है या अपनी टीम हारने वाली होती है तो बाल नोचने लगते हैं। ऐसे लोग चित्र में दिखाया व्यायाम करें। बाल मजबूत होंगे व उखड़ेंगे नहीं। बालों से दस किलो का बट्टा बांध उसे घुमाना है।
आलू वगैरह दूर तक फैंकने का अभ्यास करें। जब आप मैच देखेंगे तो आपको मैदान में दूर तक सन्तरे के छिलके फैंकने हैं।
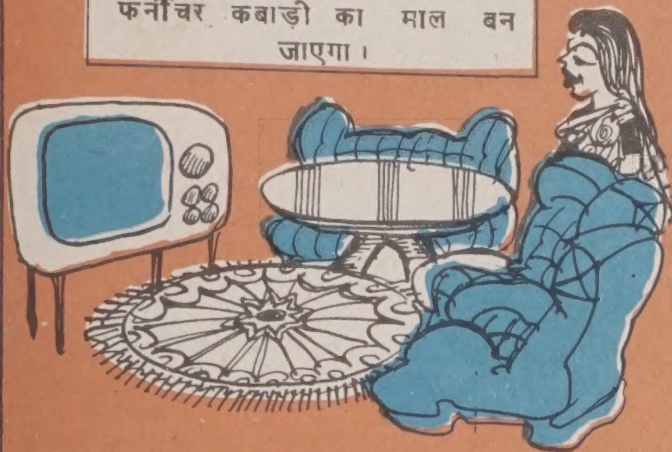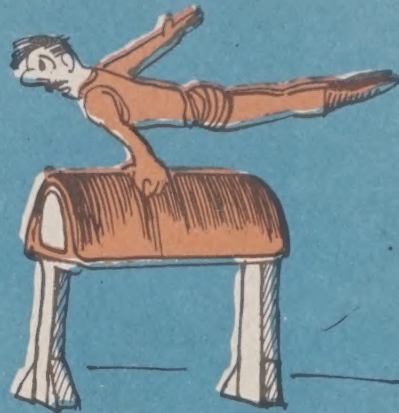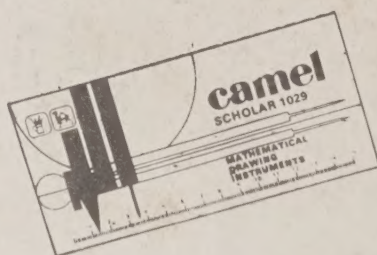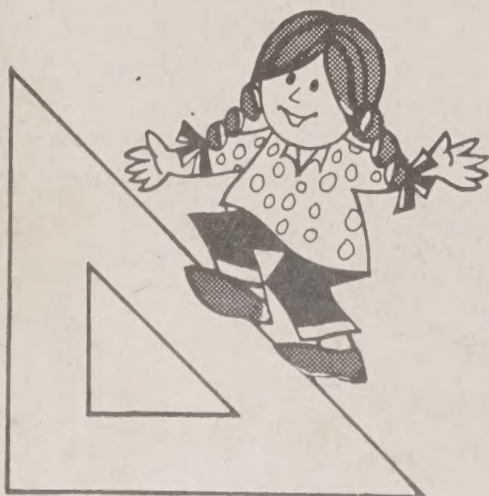
ार्मा, १६=, पुराना ाला देहरादून (उ०- =ः वर्ष, पत्र-मित्रता क्रिकेट खेलना और

सत्यपाल वधावन 'कुक' द्वारा वधावन फ्रेण्डस क्लब, रानी बाजार, कतरासगढ़ (बिहार), १६ वर्ष, फिल्म देखना पत्रिका पढ़ना।

दिनेश कुमार माली, ८-बड़ा भोई वाड़ा उदयपुर (राज०). २० वर्ष, जासूसी नावल पढ़ना, क्रिकेट खेलना, फिल्म देखना।

रामदर्शन अवस्थी, स्टेशन गाइर वारा, १७ वर्ष, पढ़ना, फिल्म देखना, अपने माता-पिता की सेवा करना, पतंग उड़ाना।

रूप कुमार राजवानी, शंकर पान भण्डार, बस स्टैण्ड रायपुर, २५ वर्ष, दुकानदारी करना, ईमानदारी बरतना, मेहनत करना।

मोहन सिंह ठाकुर, ८५, गार्ड लाइन, दमोह (म० प्र०), २५ वर्ष, सिनेमा देखना, होटल में खाना खाना तथा घूमना।

रोहित सिंह तोमर, मकान नम्बर १६५, लक्ष्मी नगर कालोनी, मक्सी रोड, उज्जैन (म० प्र०), २० वर्ष, मीठा बोलना।
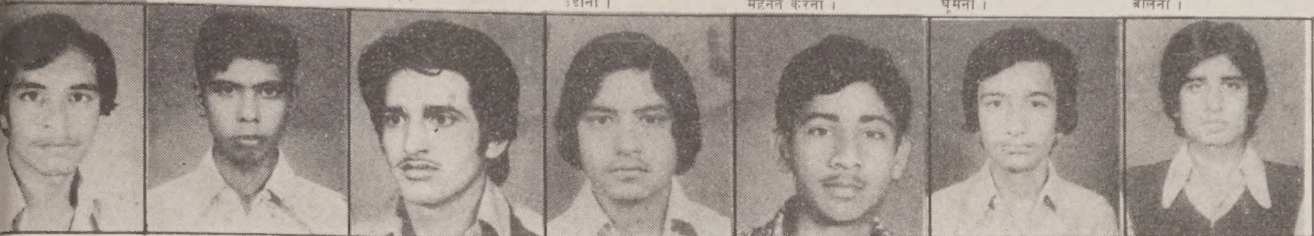
कुमार गुप्ता, अखिल- य मेड़तवाल वैश्य, छात्रावास झालावाड़, ालावाड़ (राजस्थान), , क्रिकेट खेलना।

अमजद मियां कुमी, तिबिया कालेज, करोल बाग, होस्टिल रूम न० ३५, १८ वर्ष, फिल्म देखना, सबको कमजोर समझना, रहम करना।

विजय सिंह डाभी, द्वारा, मानसिंह डाभी, वनचनी आफिस, पो० बेरमो गिरिडीह, २२ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, फिल्म देखना।

विजय "बजाज" द्वारा डा० मी० जे० बजाज, कटोरा तालाब रायपुर, १७ वर्ष, क्रिकेट खेलना, फिल्म देखना।

रहमान अहमद, मस्जिद के पास, गोलघर गोरखपुर, १७ वर्ष, फिल्म देखना, तेज चलना, दीवाना पढ़ना, पत्र-मित्रता करना।

राजन छाजेड़, २८८ कालवा देवी रोड, दूसरा, माला बम्बई, १७ वर्ष, गीत गाना, संगीत सुनना, क्रिकेट खेलना, फिल्म देखना।

चतन दास बरयानी, सिन्धी कालोनी, मकान न० २२०, भरथना (इटावा), १८ वर्ष, पत्र मित्रता करना व दीवाना पढ़ना।

कुमार साहू, ३७/३१, बाजार, जाज मऊ कानपुर, १८ वर्ष, पढ़ना, पत्र-मित्रता तार भेजना।

विजय कुमार, सूर सागर, महावीर जैन के मकान के पीछे, बीकानेर, १६ वर्ष, टिकट संग्रह करना, कमेंट्री सुनना, रेडियो सुनना।

मरीन गोयल, गोयल स्टार्स, बी. एच. ई. एल. गोविन्दपुरा, भोपाल, १२ वर्ष, पत्र मित्रता करना, क्रिकेट खेलना, दोस्ती करना।

जय भगवान सैनी, २१८ हरि नगर आश्रम, नई दिल्ली-१६, १५ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना, पत्र लिखना।

पदम शंकर चौधरी, (अध्यक्ष) सरस्वती रेडियो, श्रोता संघ, कोट बाजार, सीतामढ़ी, (बिहार), १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

गिरधारी लाल, सिलेक्शन बूट हाउस, १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, हॉकी खेलना, सैर करना, हवा में टहलना, तेज दौड़ना।

चन्द्र बहादुर कर्माचार्य, आनन्द मदिरा स्टोर्स, त्रिभुवन चौक, नेपाल गंज, १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, टिकट संग्रह करना।

श्याम शर्मा, मकान ५/४८, अजमेर, २८ दीवाना पढ़ना, पत्र- करना, फोटो ग्राफी, सुनना।

अजय कुमार, मेहन्दी क्लाथ स्टोर्स, गोल बाजार रायपुर, (म० प्र०), २० वर्ष, गिटार बजाना, पत्र-मित्रता करना, हवा में दौड़ना।

कमल किशोर सिंघल, सी०-३ १६१, जनक पुरी, नई दिल्ली, १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना, तेज चलना, हॉकी खेलना।

सुभाष राव राउत, एकता पुस्तकालय, गयाधारा रायपुर, (म० प्र०), १४ वर्ष, क्रिकेट खेलना, प्रेम करना, पत्र लिखना।

बाबू राव राऊत, नया पारा, भागीरथी मन्दिर के पास, रायपुर, (म० प्र०), १६ वर्ष, फिल्म देखना, प्रेम करना।

नरेन्द्र शर्मा, १७५ जवाहर मार्किट, १० वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना, पत्र लिखना, फरमाईश भेजना, रेडियो सुनना।
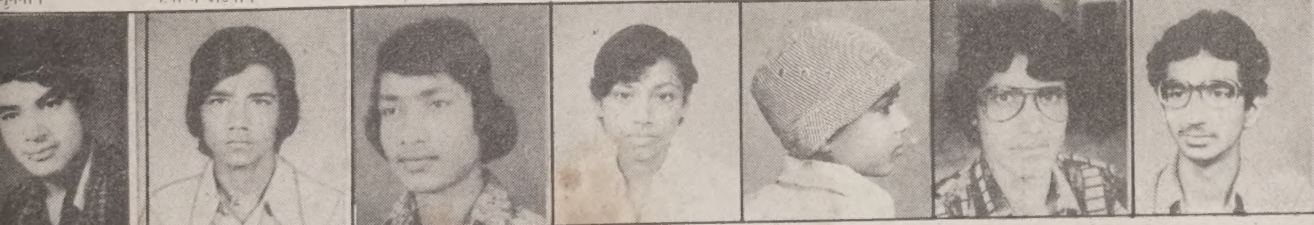
अनील कुमार, क्वाटर न० २, उल्हास नगर, जिला थाना, २० वर्ष, गाने सुनना, दीवाना पढ़ना, कवितायें लिखना।

कुमार कारचीत, ६५, दिल्ली बाजार, ण्डू, (नेपाल), २० पत्र मित्रता करना, पढ़ना।

मुकेश भटनागर, तुलजा माता मंदिर के पास, किला चित्तौड़ गढ़, (राज०), १८ वर्ष, पत्र मित्रता, डाक टिकट संग्रह करना।

राजेश कुमार दुबे, सुधाकर साईकिल स्टोर, रामसागर पारा, रायपुर, (म० प्र०), २१ वर्ष, पत्र मित्रता, शतरंज खेलना।

मनोहर लाल, २८, दुल्हिन गंज, गया, १६ वर्ष, पत्र मित्रता करना, हंसना-हंसाना, हॉकी खेलना, माता-पिता की सेवा करना।

सुखराम धर्मानी, राजेश किराना स्टोर, बैरन बाजार, रायपुर, १८ वर्ष, दीवाना पढ़ना, पत्र-मित्रता करना, क्रिकेट खेलना।

एस० ए० रजा, ७६, लेबर कालोनी, सीहोर (म० प्र०), २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना, टिकट संग्रह करना, फरमाईश भेजना।

दीपक कुमार गर्ग, २:२ तोपची बाड़ा, मेरठ, १८ वर्ष, टिकट संग्रह, कार्टून बनाना, ड्राईविंग, दीवाना पढ़ना।

र लाल, बेरगढ़, प्र०), १५ वर्ष, दीवाना लड़कों से दोस्ती बड़ों का आदर ताश खेलना।

अनिल लाल गुप्ता, अजित मोटर्स रातू रोड, रांची, १७ वर्ष, पत्रिका पढ़ना, रेडियो के सभी कार्यक्रमों में भाग लेना।

शिव शंकर सिंघल, गोविन्द राम किशन लाल, फतेहाबाद, २१ वर्ष, डायलाग, बोलना, मित्रता करना, नावल पढ़ना, दीवाना पढ़ना।

अनिल कुमार मनकड़, मकान न० ६६३७, मोहल्ला बास, सिताब राय त्वाड़ी, १६ वर्ष, क्रिकेट खेलना और मित्रता करना।

रमीक सरवैया, गोल बाजार, रायपुर, (म० प्र०), २० वर्ष, पत्र मित्रता माता-पिता की सेवा करना और उन्हें सुख देना।

दीवाना फ्रेंड्स क्लब

दीवाना फ्रेंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना फ्रेंड्स क्लब
८-ब बहादुरशाह ज़फर मार्ग
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।
नाम
पता
आयु ——— शौक

...नया बाजार दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

Regd. No. D (D) - 275

दीवानी चिपकियाँ

काटिये चिपकाइ[ये]
और मज़ा लूटिये

१९८०
में दुनिया खत्म हो जायेगी
पैसे मत बचाइये

यह कार तेल नहीं खाती
बेईमानी से चलती है

इस कॉलिज में
आशिकों को
मुफ्त ट्रेनिंग दी जाती है।
प्रिंसिपल से मिलिये

कोई बात नहीं। आप कोई काम कर भी
रहे होते तो ही कौन सा देश का
बेड़ा पार लगा देते !

इस दुकान पर
अगले जन्म के लिए भी
उधार मिलता
है

इस चिपकी को ध्यान से पढ़िये
सभी बेवकूफ ऐसा करते हैं

इस बाथरूम में गुप्त कैमरा फिट है
कपड़ों सहित
नहाइये

गुप्त रहस्य
राजनारायण वास्तव में
मंगल ग्रह का वासी है।
दलबदल कर यहां आया है।

यह चिपकी
मत उतारिये
इसी के
सहारे दीवार
खड़ी है।

इस घर को
आज
मेहमानों की
जरूरत
है